अजय कुमार उत्तम

मंत्र·तंत्र·यंत्र

विज्ञान

१००

वां

अंक

विषय सूची

वर्ष–९

अंक–४

अप्रेल-१९८९

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ गुरुर्वै सह गुरौ सह दिवौ वै श्रियै सह ब्रह्मत्वं च दिवे ।।

हे प्रभु ! आप मुझे शक्ति दें, कि मैं गुरू के चरणों में लीन होने की शक्ति प्राप्त कर सकूं, मैं उनका अनुसरण कर सकूं, मैं अपने आपको उनके माध्यम से पूर्णता प्राप्त कर ब्रह्ममय बन सकूं और सही अर्थों में "सिद्धि पुरुष" बन सकूं ।

आशीर्वाद

मैं इस पूरे वर्ष आपके साथ हूं

यों तो एक गुरू के नाते में जीवन भर आपके साथ हूँ, परन्तु सन् १९८९ को मैं "शिष्य वर्ष" के रूप में देख रहा हूं और इस पूरे वर्ष में मैं आपके साथ हूं।

यदि आप मेरे साथ हो

एक तरफ से कोई कार्य नहीं होता, यह तो आदान-प्रदान है, गुरू का शिष्य से, यदि आप मेरे साथ है, तो मैं निश्चय ही आपके साथ हूँ, जिस रूप में भी आप मेरे साथ चलना चाहे। आपके सुख में, आपके दुख में, आपकी समस्याओं के समाधान में, आपके गृहस्थ जीवन की अनुकूलता में, आपकी भौतिक आध्यात्मिक और आर्थिक उन्नति में और सबसे बड़ी बात यह है कि आपके साधनात्मक पूर्णता में मैं प्रति क्षण, प्रति पल आपके साथ हूँ, **आप जब भी इस मंजिल पर चलते चलते पीछे मुड़ कर देखेगे तो मैं तुम्हें बिल्कुल निकट खड़ा हुआ मिलूंगा, निर्देश और मार्गदर्शन देता हुआ मिलूंगा, आपको लक्ष्य तक पहुंचाता हुआ मिलूंगा।**

शर्त यही है कि आप पूर्ण समर्पण भाव से मेरे साथ हों, टुकड़ों–टुकड़ों में शिष्य समर्पण नहीं कर सकता, वह एक बारगी ही पूर्ण रूप से समर्पित होकर दिखा देता है आप पूर्ण रूप से समर्पित हो कर दिखाइए और मैं बता देता हूँ, कि गुरू कितना महान होता है और अपने शिष्य को गुरू कहां तक पहुँचा सकता है।

पर इसके लिए जुड़ना जरूरी है

दूर खड़े रहने से कुछ नहीं होगा, आप दौड़ कर हुलस कर पास आइये, और एक शिष्य की तरह आज्ञा पालन करते हुए, बताये हुए रास्ते पर बढ़ जाइये, **मैं आपको इस एक वर्ष में ही मंजिल तक पहुंचा देता हूं।** जो साधना आपने की है, जिन सिद्धियों के पीछे आपने प्रयत्न किया है, और उसमें सफलता नहीं मिली है, तो इसका कारण आपका पूर्ण रूप से समर्पित नहीं होना है, यदि नदी चलते चलते मार्ग में सूख जाय या शिथिल पड़ जाय और समुद्र में मिल ही न सके तो इसमें समुद्र क्या करेगा? समुद्र तो अपनी मर्यादा में अथाह जल राशि लिये हुए अपने स्थान पर खड़ा है, वह तो दोनों बांहे फैलाये नदी को अपने अंक में समेटने के लिए आतुर है, वह तो उस गन्दे नाले युक्त नदी को पूर्ण पवित्र और दिव्य बनाने के लिए इन्तजार कर रहा है, आवश्यकता है नदी को अपने पूरे वेग के साथ आगे बढ़ कर समुद्र में मिल जाने की, और ऐसा होते ही, वह पोखर, वह सामान्य नदी समुद्र में मिलते ही 'समुद्र देवता' के रूप में विख्यात हो जाती है, और पूरे संसार में पूजनीय बन जाती है।

और मैं भी बांहे फैलाये खड़ा हूं

आपको अपने अंक में समेटने के लिए, अपने सीने से लगाने के लिए, मैं जानता हूं कि आप गृहस्थ है, आपकी

अपनी समस्याएं है, आपके अपने सीमित साधन है, और अपनी विविध बुराइयों, न्यूनताओं, बीमारियों और कमियों के साथ आगे बढ़ रहे हैं और मुझे आपकी इन कमियों की, इन न्यूनताओं की जानकारी है। आपने बहुत लम्बी दूरी पार कर ली है, बस अब तो कुछ थोड़े से कदम और भरने है, और आप थोड़ी ही दूरी चलने पर अपने गुरू की बांहों में लिपट सकेंगे, उनके विशाल वक्ष स्थल में अपने आपको समा सकोगे, उनके ज्ञान के समुद्र में अपने आपको निमग्न कर सकोगे, और जब ऐसा हो जायेगा तब फिर जीवन में कोई समस्या, कोई परेशानी, कोई बाधा अड़चन या बीमारी बाकी नहीं रहेगी, आप के आलोक से हजारों लाखों लोगों का कल्याण हो सकेगा।

निखिल पंच रत्न

साकार गुणात्मक ब्रह्म मयं शिष्यत्वं पूर्ण प्रदाय नयं।
त्वं ब्रह्म मयं सन्यास मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ।।१।।

करुणा वर अब्ज दया देहं लय बीज प्रमाण त्व सृष्टि करं।
त्वं मंत्र मयं त्वं तन्त्र मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ।।२।।

कर्मेश विधेश सुरेश मयं सिद्धाश्रम योगिन साख्य स्वयं।
त्वं ज्ञान मयं त्वं तत्व मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ।।३।।

अति दिव्य सु देह सकोटि छवि मम नैत्र चकोर दृगात्म मयं।
सुख दं वर दं वर साध्य मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ।।४।।

त्वं ज्योतिर्मय त्वं ज्ञानमयं त्वं शिष्यमयं त्वं प्राणमयं।
मम आतव शिष्यत् त्राण प्रभो निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ।।५।।

अभी तक आपकी समस्याएं नहीं सुलझी होगी, आपने मुझे पारिवारिक समस्याएं बताई होगी, और मैं उस पर पूरा ध्यान नहीं दे पाया होऊंगा। इसका कारण मैं आपको परख लेना चाहता था, मैं देख लेना चाहता था, कि आपके पैरों में कितनी ताकत है, मैं आपके स्वार्थ के पैमाने को नाप लेना चाहता था, और मैं यह जानना चाहता था कि क्या आप वास्तव में ही शिष्य है, या शिष्यत्व का केवल ढोंग ही हैं। क्योंकि यदि केवल यह ढोंग है, तो ज्यों ही आपका काम मेरे द्वारा सम्पन्न नहीं होगा, आप टूट जायेंगे, अलग हो जायेंगे और वे मौसमी फूल बगीचे में लगाने से भी क्या फायदा, जो दो चार दिन तक तो बहुत सुन्दर खिले हुए दिखाई दे, और उसके बाद तुरन्त मुरझा जांय, बगीचे में तो सदाबहार विक-

सित अद्वितीय फूल खिले हुए होने चाहिए, जिनको देख कर तृप्ति मिले, जिनके पास बैठने से आनन्द की अनुभूति हो।

इस वर्ष में वह सब करूंगा

जो आप चाहते है, यदि आपकी पारिवारिक या गृहस्थ से सम्बन्धित समस्या नहीं सुलभी है तो आप एक बार पुनः मिलिये और अपनी बात को बिना संकोच के साफ साफ बता दीजिये, **जब मैंने इस पूरे वर्ष को शिष्य वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया ही है, तो मेरा भी यह कर्त्तव्य है कि मैं पहले आपकी भौतिक और पारिवारिक समस्याओं का सामना करूं और अपनी साधना के द्वारा उन समस्याओं का समाधान करूं, आपकी बात ध्यान से सुनूं और आपको चिन्ता मुक्त कर सकूं और मैं यह अवश्य ही करूंगा चाहे इसके लिए मुझे अतिरिक्त श्रम करना पडे, चाहे इसके लिए मुझे जरूरत से ज्यादा व्यस्त होना पड़े और चाहे इसके लिए मुझे साधना के द्वारा कुछ भी करना पड़े।** मैं हर हालत में आपकी बात को सुनूंगा उसके तनाव को उसकी जटिलता को अनुभव करते हुए उसका समाधान करूंगा, जिससे कि आप निश्चित और निष्काम्य हो सकें, जिससे कि आपके चेहरे पर प्रसन्नता उभर सके, और मेरे लिए आपकी प्रसन्नता, आपका खिला हुआ चेहरा और आपकी मुस्कराहट ही पूंजी है।

और तुम्हें बनाना है, सिद्धि पुरूष

यह कोई कपोल कल्पना नहीं है, यह कोई थोथा वक्तव्य या आडम्बर नहीं है, मैं शुद्ध, सरल और निश्छल हृदय से यह चाहता हूं कि आप सिद्धि पुरूष बन सकें आप जिस साधना में पूर्णता चाहते है, जिस साधना में सफलता चाहते है, मैं उस साधना को आपको दूंगा, और साथ ही साथ मैं बताऊंगा उनकी बारीकियां, मैं बताऊंगा उनके सूक्ष्म रहस्य, मैं बताऊंगा उनकी गोपनीय क्रियाएं, जिसके माध्यम से आप पहली बार में ही सफलता प्राप्त कर सके। पहली ही बार में आपको पूर्ण अनुभूति हो सके, और आप जो कुछ चाहते हैं, जिस प्रकार से चाहते हैं, वह सम्पन्न हो सके, और ऐसा होने पर ही आप सिद्धि पुरूष बन सकेंगे। ऐसा होने पर ही आप सीने पर हाथ रख कर गर्व के साथ कह सकेंगे कि मैं सही अर्थों में शिष्य हूं, मैं सही अर्थों में सिद्धि पुरूष हूं। मैं सही अर्थों में प्राचीन विद्याओं के उन्नयन और ऋषि संतान हूं **और यह इस वर्ष होगा ही, निश्चित रूप से ही होगा, संसार की कोई शक्ति रोक नहीं सकती, प्रवाह को झाड़ झंखाड़ रोक नहीं पाते, सूर्य की प्रखर रश्मियों को पृथ्वी पर आने में वायु रोक नहीं सकती, और आपको पूर्ण सिद्धि पुरूष बनाने में मुझे कोई रोक नहीं सकता।**

पर इसके लिए यह जरूरी है

कि आप इसके लिए तैयार हो, आप इस वर्ष ज्यादा से ज्यादा समय मुझे दे, आप इस वर्ष ज्यादा से ज्यादा मुझे मिले और मेरे मन में जो कल्पना है, मेरा जो उद्देश्य है, मेरा जो लक्ष्य है, उसे पूर्ण करने में आप प्रयत्नशील हो। आप सही अर्थों में शिष्य हो, पूर्ण रूप से समर्पित शिष्य हो और जिस रास्ते पर आगे बढ़ाऊं आप बढ़ जांय, मैं आपको आज्ञा दूं उसका पूर्ण रूप से पालन हो। मैं आपसे जो चाहूं वह हो और मैं आपको साधनाओं के क्षेत्र में जिस प्रकार से ढालूं आप ढल जांय और यदि ऐसा है, तो निश्चय ही आने वाला भविष्य आपका है, वास्तव में ही आप अपने आप पर गर्व कर सकेंगे कि आपने वह सब कुछ प्राप्त किया है, जो अपने आप में अद्वितीय है।

और मैं इस पूरे वर्ष ३६५ दिनों तक आपके प्रत्येक कदम के साथ हूं प्रत्येक क्षण साथ हूं, प्रति पल मेरा साहचर्य, मेरा सहयोग, मेरा ज्ञान, और मेरा व्यक्तित्व आपके साथ हैं।

एक साक्षात्कार

अगली नस्लें याद करेंगी तुमने निखिलेश्वरानंद को देखा था

किंकर स्वामी

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी को मैं अत्यन्त निकट से जानता हूँ। सदियों में एक आध व्यक्तित्व ही ऐसा होता हैं, जिसके बारे में कुछ कहा जा सकता हैं जिसके बारे में लिखने से आनन्द भी अनुभूति हो सकती है. जिसके पास बैठने से कुछ ऐसा एहसास होता है कि हम इस व्यक्तित्व से कुछ प्राप्त कर रहे हैं और ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी हैं, स्वामी निखिलेश्वरानंद जी।

परन्तु इनकी न्यूनता यह है कि इन्होंने अपने आपको प्रचार प्रसार से बहुत दूर रखा है, अपने आपको विज्ञापित करना या प्रचार पाने की कोशिश करना इनके स्वभाव में ही नहीं है। उच्चकोटि के सन्यासी-सम्मेलनों में जब इन्हे अध्यक्ष पद के लिए आमंत्रित किया जाता था तो ये अत्यन्त विनम्रतापूर्वक मना कर एक तरफ हट जाते थे, अगर इनकी जगह कोई दूसरा व्यक्ति होता और जो ज्ञान इनके पास है, जितनी शक्ति और सामर्थ्य इनके पास है, उसका सौवां हिस्सा भी यदि किसी के पास होता तो वह चीख-चीख कर अपने बारे में बताता रहता, पूरी दुनियां उसके चारों तरफ घेरा डाले रहती, परन्तु इस व्यक्ति में ऐसा कुछ भी नहीं है, या मैं यूं कहूं कि यह व्यक्ति प्रचार-भीरू है तो ज्यादा सही होगा।

जो दर्प जो विशालता जो प्रखरता और जो प्रचण्डता इनके सन्यासी जीवन में मैंने देखी है, जो त्यागवृत्ति और निष्प्रहता मैंने सन्यास जीवन में इनके प्रति अनुभव की हैं वह अपने आपमें एक मिसाल है, सैकड़ों-सैकड़ों सन्यासी शिष्य आतुर रहे है इनका शिष्यत्व प्राप्त करने के लिए। हजारों योगी और सन्यासी व्यग्र रहे है, इनके पास कुछ क्षण बैठने के लिए, इनसे कुछ सीखने के लिए और इनसे बहुत कुछ प्राप्त करने के लिए, और इन्होंने सभी को बहुत कुछ देने का प्रयास किया, इनके द्वार हमेशा सब

के लिए खुले रहे, न किसी प्रकार का व्यस्तता का भाव रखा और न व्यर्थ का अहंकार, इसीलिए आज हिमालय के हजारों-हजारों सन्यासी परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का नाम स्मरण करते ही श्रद्धा से झुक जाते है, फिर भले ही उन्होंने इस विराट व्यक्तित्व को देखा हो या नहीं, परन्तु हिमालय के कण-कण में उनका व्यक्तित्व गुंजरित है, और उन्होंने हिमालय को पूरे भारतवर्ष से परिचित कराने में जो योगदान दिया है, साधना की पूर्णता के लिए जो प्रयत्न किया है उसकी अपने आपमें कोई मिसाल नहीं है।

इन पंक्तियों के माध्यम से मैं उनकी आत्मश्लाघा नहीं कर रहा हूं, मैं कोई उनकी प्रशंसा या विज्ञापन भी नहीं कर रहा हूं, उस व्यक्तित्व को इसकी जरूरत भी नहीं है **यदि आकाश में प्रखर सूर्य अपने पूर्ण तेज पुंज से चमक रहा हो और उल्लू अपनी आंखें बन्द कर ले या सूर्य को नहीं देखे और वह कहे कि सूर्य है ही नहीं, तो इसमें सूर्य का क्या दोष ? यदि वर्षा ऋतु में अत्यन्त मधुर वर्षा की बूंदे सम्पूर्ण पृथ्वी को आप्लावित कर रही हो, और कोई चातक अपनी चोंच खोल कर उस मधुर जल को प्राप्त ही नहीं कर सके तो इसमें वर्षा का क्या दोष ? और यदि कहीं पर विराट व्यक्तित्व और ज्ञान का पुंज साकार हो, और कोई उसे प्राप्त करना ही न चाहे और अपनी आंखें बन्द किये अपने ही अहंकार में चूर अपनी ही अज्ञानता से व्यक्तित्व की आलोचना करता रहे, तो उसमें उस व्यक्तित्व का क्या दोष ?**

सिद्धाश्रम का आधारपुंज

आप अपने घर में बैठे इस बात को अनुभव नहीं कर सकेंगे, कि एक व्यक्तित्व के होने और न होने से कितना बड़ा अन्तर आ जाता है, फिलहाल आप इस बात का अनुभव नहीं कर सकेंगे, कि किसी विराट व्यक्तित्व के होने या न होने से संस्था में कितना अधिक अन्तर आ जाता है यह हमने अनुभव किया है, इसमें कोई दो राय नहीं कि सिद्धाश्रम समस्त ब्रह्माण्ड का आध्यात्मिक चेतना पुंज है, और वहां निरन्तर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न की जा रही है। परन्तु निखिलेश्वरानंद जी के वहां स देह होने या न होने से बहुत बड़ा अन्तर हम अनुभव कर रहे है, उनके वहां होने से एक चेतना एक वातावरण और एक ऐसा माहौल बना रहता है, जिससे कण-कण गुंजरित रहता है, स्वामी जी ने पहली बार यह अहसास दिलाया कि साधना रूखी सूखी और निर्जीव बे रस नहीं है, अपितु इसमें भी आनन्द और मधुरता का सामंजस्य है उन्होंने ही पहली बार सिद्धाश्रम को भारतीय और कलात्मक नृत्य से संयोजित किया, पहली बार देवताओं को सिद्धाश्रम में साक्षात रूप में उपस्थित करने का प्रयास किया, पहली बार आंखें बन्द किये योगियों को मुस्कराहट और हंसी प्रदान की, पहली बार शान्त और निर्जन वातावरण में खिलखिलाहट, हास्य और आनन्द का उद्रेक किया और आज सिद्धाश्रम में जो चहल-पहल है, जो आनन्द का सागर लहराता है, वह सब उनकी देन है, आज भी वे सूक्ष्म प्राणों से नित्य या लगभग नित्य आकर सबको संभाल लेते है, सभी के हाल-चाल पूछ लेते है, सभी की बात सुन लेते है, और सभी को बहुत कुछ बना देते है, यह एक आश्चर्य इस रूप में, कि अत्यधिक व्यस्त रहता हुआ आदमी इतना समय कैसे निकाल लेता है, परन्तु हमने अपनी इन आंखों से देखा है, **पिछली शिवरात्रि को ही उन्हें अपने गृहस्थ शिष्यों के बीच स स्वर रूद्राभिषेक करते हुए, और शिव पूजन कराते हुए देखा है, तो ठीक उसी क्षण उन्हें सन्यासी शिष्यों के बीच भी भगवान पारदेश्वर का पूजन सम्पन्न कराते हुए मैंने अपनी इन आंखों से देखा है,** मैंने उसमें भाग लिया है और आनन्द की असीमता अनुभव की है। एक ही क्षण में दो स्थानों पर दो रूपों में साधना सम्पन्न कराना एक विराट व्यक्तित्व का ही रूप हो सकता है और इस बात के लिए हम सब लोगों को गौरव और गर्व है।

जिन्होंने कदमों से नापा है, ब्रह्माण्ड को

और यह कह कर मैं कोई अनहोनी बात नहीं कह रहा हूं, मैं तो इन पंक्तियों के माध्यम से वही सब कुछ कह रहा हूं, जो मैंने उनके साथ रह कर अनुभव किया है जो मैंने उनके साथ रह कर सीखा है, समझा है, अहसास किया है, मैं उनका शिष्य भी नहीं हूं एक तरह से गुरू भाई के रूप में हूं, परन्तु मैं आज अहसास करता हूं कि यदि मैं उनका शिष्य होता तो मैं अपने आपको ज्यादा गौरवान्वित अनुभव करता, उनकी साधनात्मक गति के आगे यह भू-मण्डल बहुत छोटा सा है जिस किसी दिन उन्होंने ब्रह्माण्ड के रहस्यों को उजागर किया. उस दिन पूरी पृथ्वी पर तहलका सा मच जायेगा क्योंकि उन्होंने उन ग्रहों नक्षत्रों को देखा है, वहां पर विचरण किया है जहां पर मानव विद्यमान है जहां पर विज्ञान की ऊंचाइयां है, जहां पर साधना की प्रतिभूतियां है और मुझे विश्वास है कि वह दिन जल्दी ही आने वाला है जब वे इस विषय पर साधना के इस रहस्य पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

पर जब मैं उन्हें गृहस्थ जीवन में देखता हूं तो अपने आप में दंग रह जाता हूं, मेरा मन, मेरा मस्तिष्क और मेरी साधना विश्वास नहीं कर पाती कि हिमालय का उच्च कोटि का योगी निखिलेश्वरानंद और जोधपुर में कार्य करने वाला यह व्यक्तित्व दोनों एक ही है, एक सामान्य मनुष्य के रूप में जीवन संचालित करने वाला हर क्षण सक्रिय रह कर कार्य करने वाला व्यक्तित्व एक ही है, यह समायोजन करना बड़ा कठिन हो रहा है, पर जो कुछ मैं देख रहा हू वह भी सत्य है और जो कुछ देखा है वह भी पूर्ण सत्य है, उच्च कोटि का व्यक्तित्व ही इस प्रकार का नम्र और विनीत हो सकता है। **हरी भरी फूलों की डाली बार बार लचक सकती है, झुक सकती है, झूम सकती है, सूखा ठूंठ न तो झुक सकता है, और न किसी को छाया और आनन्द दे सकता है।**

और यही पर मुझे वेदव्यास के उस श्लोक का स्मरण हो आता है कि भगवान श्री कृष्ण पूर्ण सोलह कला होते हुए भी जीवन भर अत्यन्त नम्र बने रहे, उन्होंने सामान्य रूप से मनुष्य की तरह जन्म लिया, अवतरित नहीं हुए, सामान्य बालकों की तरह आचरण किया, ठीक उसी प्रकार खेले कूदे, कार्य किया, और ठीक उसी प्रकार से रोना हंसना, प्रेम करना, मुस्कराना और शिक्षा प्राप्त करना उन्होंने किया, **इसीलिए कि वे यदि मानव को कुछ देना चाहते थे तो उनके लिए यह आवश्यक था कि वे भी सामान्य मानव की तरह बने रहे, ठीक उसी प्रकार दुःख सुख का अनुभव करे। सामान्य मनुष्य की तरह ही उदास हो, परेशान हो, चिन्तित हो, मुस्कराये, हंसे, खिल खिलाये और कहीं से भी किसी को ऐसा अहसास भी न होने दें, कि यह अर्जुन के रथ पर बैठा हुआ सामान्य सारथी अपने आपमें विराट तेज पुंज लिये हुए है।** सब लोगों ने उसे सामान्य और साधारण मनुष्य समझा, द्रोपदी ने उलाहना दिया. अर्जुन ने बुरा भला कहा दुर्योधन ने अपना प्रबल शत्रु समझा परन्तु इतना होने पर भी वे सामान्य मानव बने रहे पर इसी सामान्य मानव ने गीता जैसा विराट ग्रन्थ अगली पीढ़ियों को सौंपा, सामान्य दिखने वाले व्यक्ति ने पूरे महाभारत युद्ध को जीत कर दिखा दिया कि विराटता प्रदर्शन करने की चीज नहीं है।

और इस श्लोक के अन्त में वेदव्यास ने बहुत सुन्दर बात कही है कि द्वापर युग का यह सौभाग्य था, कि उस युग में भगवान श्री कृष्ण जैसे विराट व्यक्तित्व ने जन्म लिया, विचरण किया, और कार्य किया, परन्तु द्वापर युग का यह दुर्भाग्य भी था कि उस समय के लोगों ने श्रीकृष्ण के महत्व को न तो समझा और न उसका लाभ ही उठाया उनके जाने के बाद आने वाली पीढ़ियों ने उनकी विराटता को अहसास किया, उनके ज्ञान और चिन्तन को समझने का प्रयत्न किया, वह एक ऐसा व्यक्तित्व था, जो लौकिक रूप में प्रेम करता हुआ. दिखाई देता था, राधा के पीछे मंडराता हुआ, और बांसुरी बजाता हुआ दिखाई देता था, उसी सामान्य मनुष्य ने गीता जैसा अद्वितीय ग्रन्थ भी लिखा, जो सारथी बना हुआ सामान्य व्यक्तित्व

ल ग रहा था, उसने महाभारत जैसे युद्ध में पाण्डवों को विजय दिला कर यह बता दिया कि विराटता अपने आत्म का तत्व है। काश! द्वापर युग के लोग उस विराट व्यक्तित्व को पहिचान पाते, उससे जुड़ पाते, तो निश्चय ही वे लोग अपने आपमें पूर्णता प्राप्त कर पाते, परन्तु यह सब तो बाद में ही होना था, उनकी महानता और विराटता को आने वाली पीढ़ियों ने ही अनुभव किया उसी युग में किसी व्यक्ति की विराटता और महानता को अनुभव किया ही नहीं जाता, वे तो केवल आलोचना कर सकते हैं, और यह समाज का नियम है, मैं समझता हूं, उसी समय-चक्र की पुनरावृत्ति हो रही है।

अगली नस्लें याद रखेंगी

जिस रूप में यह उच्चकोटि का व्यक्तित्व सामान्य मनुष्य की तरह हर्ष, शोक, सुख-दुःख में जी रहा है, आलोचनाओं के झंझावत में आगे बढ़ रहा है, उस रूप में आज का सामान्य मनुष्य इस विराट व्यक्तित्व को नहीं पहिचान सके, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जिस प्रकार से यह व्यक्तित्व अपने सामान्य गृहस्थ शिष्यों को समझा रहा है, उनके संदेह, उनकी आलोचनाओं के बीच अपने आपको एक निष्ठा कर रहा है, वह वास्तव में ही बहुत कठिन है, इस प्रकार का जहर पीते रहना सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं है। जिस प्रकार से ये गृहस्थ शिष्य अपने आपको शिष्य कहने का दम्भ रखते है, उस हिसाब से तो 'शिष्य' शब्द की परिभाषा ही बदल जायेगी फिर तो हम सन्यासी शिष्यों को अपने लिये शिष्य शब्द न लगा कर कुछ और शब्द लगाना चाहिए, होना तो यह चाहिए था, कि इस सामान्य मनुष्य के आवरण के भीतर जो महानता और विराटता छिपी हुई है, उसे हम पहिचानने का प्रयत्न करे, उनसे आत्म संबंध स्थापित करे उनके कार्यों में योगदान दे, और कुछ ऐसा करे जिससे कि हम सही अर्थों में शिष्य कहलाने का गौरव प्राप्त कर सके, एक बार फिर उनके होठों पर मधुरता के साथ "शिष्य" शब्द, उच्चरित हो काश, ऐसा हो पाता।

आज इस जन्म दिवस के अवसर पर मैं समस्त सन्यासी योगियों और हिमालय के कण-कण की तरफ से सिद्धाश्रम के प्रत्येक व्यक्तित्व की तरफ से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और हम सब कामना करते है, कि हमारा जीवन हमारी आयु, उन्हें प्राप्त हों, और वे ज्यादा वर्षों तक जीवित रह कर अद्वितीय कार्य सम्पन्न करते रहें।

और यह बात भी दो टूक सत्य है, कि आप सब गृहस्थ शिष्यों का सौभाग्य है, कि हमारी अपेक्षा आप लोगों को इस व्यक्तित्व ने ज्यादा समय, ज्यादा अवसर और ज्यादा सुविधाएं दी हैं। आज भले ही आप इन पर या अपने आप गर्व का अहसास न कर सके, पर यह निश्चित है, कि आने वाली पीढ़ियां आप पर गर्व करेगी कि आप कभी इस विराट व्यक्तित्व के सम्पर्क में रहे है। आने वाली पीढ़ियां सहसा आप पर या आपके कथन पर यह विश्वास नहीं कर पायेगी कि आपने इस विराट व्यक्तित्व के साथ कुछ क्षण बिताये है, इनके साहचर्य में रहे है, और इनके मुंह से अपने लिए "शिष्य" शब्द का उच्चारण सुना है। परन्तु हम सब लोगों को आप गृहस्थ शिष्यों पर ईर्ष्या है, कि आप हम लोगों की अपेक्षा इनके साथ रहने के लिए ज्यादा समय प्राप्त कर सके है और आप के सौभाग्य पर गर्व है कि आप इनके साथ है, आने वाली पीढ़ियां आप पर गर्व करेगी।

ग्रह बाधा, पितृ दोष एवं रोग निवारण हेतु

एक अद्भुत

शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग

जीवन में मनुष्य को तीन तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसकी वजह से उसे कई प्रकार की परेशानियों को भोगना पड़ता हैं, और उनके समाधान के लिए वह प्रयत्न भी करता है।

ग्रह दोष निवारण

अब यह सिद्ध हो चुका है, कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता ही है, और उसकी वजह से मानव को विविध प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते है, नवग्रहों में भी सूर्य मंगल, राहु और शनि अत्यन्त क्रूर एवं घातक ग्रह है, इनके प्रभाव से विविध प्रकार के कष्ट एवं दुख भोगने पड़ सकते है। शनि की दशा आने पर भगवान राम तक को वनवास भोगना पड़ा। इन ग्रहों की शांति के लिए "शनैश्चरी अमावस्या" का प्रयोग एक दुर्लभ और तुरन्त अनुकूलता देने वाला प्रयोग है।

पितृ दोष

आज की पीढ़ी इस बात को स्वीकार करे या न करे व्यक्ति को पितृ दोष भी भुगतना ही पड़ता है। हमारे माता पिता, बड़ा भाई या अन्य कोई संबंधी जब अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, या मृत्यु के बाद भी उसकी इच्छाएं-भावनाएं बनी रहती है, तो वे उन इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपने संबंधियों को यातना दुःख और कष्ट देकर अपनी बात मनवाने का प्रयत्न करते है। मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है, कि पितृ दोष की वजह से घर में निरन्तर उपद्रव होते रहते है, लड़के या लड़कियां कहना नहीं मानते, पति या पत्नी को एक एक मिनट में गुस्सा आने लगता है और इस प्रकार के कई कार्य घर में होने लगते है, जिससे सारा वातावरण दूषित हो जाता है। इसका मूल कारण पितृ दोष ही है, और इसका समाधान भी शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग से ठीक हो सकता है।

रोग वृद्धि

कभी कभी घर में ऐसी बीमारी घर कर जाती है, कि घर का कोई न कोई सदस्य बीमार बना ही रहता है, और काफी बड़ा बजट उन लोगों की चिकित्सा में व्यय हो जाता है। इलाज कराने पर दो चार दिन तो अनुकूलता दिखाई देती है, इसके बाद फिर वैसा ही दृश्य या वैसी ही स्थिति बन जाती है। इस प्रकार से घर के मालिक को उसकी पत्नी को बहू को, बेटी को, पुत्र को या पोते पोतियों को विविध प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते है और इन बीमारियों से कोई छुटकारा दिखाई नहीं देता इसके लिए भी शास्त्रों में शनैश्चरी अमावस्या का प्रयोग

बताया है।

शनैश्चरी अमावस्या

ज्योतिष गणना के अनुसार कई वर्षों बाद शनैश्चरी अमावस्या की स्थिति बनती है। जिस अमावस्या को शनिवार हो उसे "शनैश्चरी अमावस्या" कहते है। **सौभाग्य से इस बार ३ जून ८९ को शनैश्चरी अमावस्या है, इस दिन जेष्ठ कृष्ण अमावस्या है और शनिवार भी है। ऐसा सुयोग काफी समय बाद आया है, सौभाग्य से इसी दिन "शनि जयन्ती" भी है अतः इसका महत्व बहुत अधिक बन गया है।**

उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए प्रत्येक साधक को इस मुहूर्त का और इस दिन का प्रयोग करना चाहिए और इससे संबंधित साधना सम्पन्न करनी चाहिए जिससे कि जीवन में रोग, शोक,दुःख, दारिद्रय, पितृदोष आदि से मुक्ति पा सके और परिवार में सभी दृष्टियों से अनुकूलता आ सके।

साधना सामग्री

इसके लिए कोई विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, घर में जितने भी सदस्य है, उन सभी के नाम की "तांत्रोक्त शनैश्चरी मुद्रिका" प्राप्त कर लेनी चाहिये **जो कि तांत्रोक्त दोष निवारण से सिद्ध और रोगादि बाधाओं से निवृत्ति प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए। यह मुद्रिका ऐसी होनी चाहिए जिस पर तांत्रोक्त नवग्रह मंत्र के पांच हजार जप सम्पन्न किये हुए हो। इस प्रकार से सिद्ध मुद्रिका इस अदभुत अवसर पर प्रयोग की जाती है, जिस पर व्यय मात्र ६०) आता है।**

इसके लिए आपको पहले से ही व्यवस्था कर के रखनी चाहिए, और पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखते समय स्वयं का नाम और परिवार के सदस्यों का नाम लिख भेजे जिनके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना है। पत्र भेजते समय आप उनका नाम उनकी उम्र और उनका आप से क्या संबंध है, जैसे वह आपकी पत्नी है, पुत्र है, पुत्र वधू है, पिता है, या क्या संबंध है, वह लिख कर भेजना चाहिये जिससे कि इन से संबंधित अलग अलग मुद्रिकाएं भेजने की व्यवस्था की जा सके।

रात्रि को साधना करने के बाद संबंधित मुद्रिकाएं या तो संबंधित व्यक्ति धारण कर ले या अपने अपने सन्दूक में रख दें, अथवा घर का मुखिया इन सभी मुद्रिकाओं को लाल कपड़े में बांध कर एक स्थान पर रख दें, जिससे कि समस्त प्रकार के उपद्रव और बाधाएं शान्त हो सके।

साधना प्रयोग

३ जून की रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय सामने एक थाली में सभी मुद्रिकाओं को रख दें, और तेल का दीपक लगावे।

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक जाति, का व्यक्ति अमुक नाम के घर का मुखिया, घर के अमुक नाम के सभी सदस्यों के रोगों, ग्रह बाधाओं और बीमारियों को दूर करने के लिए शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

इसके बाद पुनः हाथ में जल ले कर विनियोग करें, विनियोग का तात्पर्य हाथ में जल ले कर निम्न लिखित उच्चारण कर जल छोड़ दें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखी-मन्त्रस्य नारद-ऋषिः। त्रिष्टुप्: छन्दः बगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे एवं समस्त परिवार शरीरे नाना ग्रहोपग्रह सम्पूर्ण रोग-समूह-नाना दुष्ट रोग

शान्त्यर्थ सर्व दुष्ट बाधा कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य लाभार्थे कार्य सिद्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

निम्न उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर दाहिने हाथ से स्पर्श करें–

नारद ऋषये नमः शिरसि ।
त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।
बगलामुखी देवतायै नमः हृदि ।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा-शक्तयै नमः पादयोः ।

इसके बाद साधक बताये हुए अंगों को स्पर्श करते हुए अंग न्यास, कर न्यास करें ।

अंग न्यास	कर न्यास	हृदयादि-न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगला मुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वांच मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान

फिर हाथ में अक्षत लेकर इन यन्त्रों के सामने चढ़ाते हुए निम्न ध्यान उच्चारण करें–

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परि-पीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

इसके बाद मूंगे की माला से (यदि मूंगे की माला न हो तो किसी भी प्रकार की माला से) निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करे ।

मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखीं परिवार स्य देह स्थित नाना रोगान् प्रतिबन्धक ग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरू कुरु ह्लीं ॐ स्वाहा ।

दूसरे दिन सुबह उठ कर साधक को चाहिए कि वह सात कुमारी बालिकाओं तथा एक छोटे बालक को पूजन कर भोजन कराये और भोजनोपरान्त उसे यथा शक्ति दक्षिणा दें, भोजन में केवल बेसन के लड्डू हो सकते हैं, इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार का भोजन न दें ।

मैंने अपने जीवन में कई प्रकार की समस्याओं, बाधाओं और अड़चनों के समय कठिन और असाध्य रोगों से लोगों को इस प्रयोग से मुक्ति दिलाई है, किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा पितृ बाधा या रोग हो तो निश्चय ही इस प्रयोग से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती ही है ।

सिद्धाश्रम पञ्चांग

१९८९

दिनांक	मिति	वार	पर्व
७-४-८९	चैत्र शुक्ल १	शुक्रवार	नवरात्रि प्रारम्भ
१३-४-८९	चैत्र शुक्ल ८	गुरूवार	दुर्गा अष्टमी
२०-४-८९	चैत्र शुक्ल १५	गुरूवार	हनुमान जयन्ती
२१-४-८९	चैत्र शुक्ल १५	शुक्रवार	गुरूदेव जन्म दिवस
७-५-८९	वैसाख शुक्ल २	रविवार	परशुराम जयन्ती
८-५-८९	वैसाख शुक्ल ३	सोमवार	अक्षय तृतिया
९-५-८९	वैसाख शुक्ल ५	मंगलवार	शंकराचार्य जयन्ती
१९-५-८९	वैसाख शुक्ल १४	शुक्रवार	नृसिंह जयन्ती
३-६-८९	ज्येष्ठ कृष्ण ३०	शनिवार	शनैश्चरी अमावस्या
११-६-८९	ज्येष्ठ शुक्ल ८	रविवार	धूमावती जयन्ती
१३-६-८९	ज्येष्ठ शुक्ल १०	मंगलवार	बटुक भैरव जयन्ती
२१-६-८९	आषाढ़ कृष्ण २	बुधवार	सन्यास जयन्ती
२७-६-८९	आषाढ़ कृष्ण ९	मंगलवार	सिद्धाश्रम जयन्ती
३-७-८९	आषाढ़ कृष्ण ३०	सोमवार	सोमवती अमावस्या
१८-७-८९	आषाढ़ शुक्ल १४	मंगलवार	गुरू पूर्णिमा
२३-७-८९	श्रावण कृष्ण ५	रविवार	महालक्ष्मी जयन्ती
३०-७-८९	श्रावण कृष्ण १३	रविवार	भाग्योदय दिवस

७-८-८९	श्रावण शुक्ल ६	सोमवार	शून्य साधना जयन्ती
१७-८-८९	श्रावण शुक्ल १५	गुरूवार	गायत्री जयन्ती–रक्षा बन्धन
२१-८-८९	भाद्रपद कृष्ण ५	सोमवार	हनुमान सिद्धि जयन्ती
२४-८-८९	भाद्रपद कृष्ण ८		श्री काली जयन्ती
३१-८-८९	भाद्रपद कृष्ण ३०	गुरूवार	सिद्धि दिवस
४-९-८९	भाद्रपद शुक्ल ४	सोमवार	गणेश जयन्ती
५-९-८९	भाद्रपद शुक्ल ५	मंगलवार	ब्रह्म सिद्धि जयन्ती
७-९-८९	भाद्रपद शुक्ल ७	गुरूवार	अष्ट सिद्धि लक्ष्मी जयन्ती
९-९-८९	भाद्रपद शुक्ल ९	शनिवार	१०८ लक्ष्मी सिद्धि जयन्ती
१२-९-८९	भाद्रपद शुक्ल १२	मंगलवार	श्री भुवनेश्वरी जयन्ती
१४-९-८९	भाद्रपद शुक्ल १४	गुरूवार	अनन्त चतुर्दशी
१६-९-८९	आश्विन कृष्ण १	शनिवार	श्राद्ध प्रारम्भ
३०-९-८९	आश्विन शुक्ल १	शनिवार	शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ
७-१०-८९	आश्विन शुक्ल ७	शनिवार	महा सरस्वती आह्वान
१०-१०-८९	आश्विन शुक्ल १०	मंगलवार	विजयादसमी पूजा
१३-१०-८९	आश्विन शुक्ल १३	शुक्रवार	गुरू सिद्धि दिवस
१४-१०-८९	आश्विन शुक्ल १५	शनिवार	शरद पूर्णिमा
१८-१०-८९	कार्तिक कृष्ण ४	गुरूवार	तारा जयन्ती
२७-१०-८९	कार्तिक कृष्ण १३	शुक्रवार	धन त्रयोदसी
२९-१०- ९	कार्तिक कृष्ण ३०	रविवार	दीपावली, महालक्ष्मी पूजा।
३०-१०-८९	कार्तिक शुक्ल १	सोमवार	श्री कमला जयन्ती
३-११-८९	कार्तिक शुक्ल ५	शुक्रवार	सौभाग्य प्राप्ति जयन्ती
४-१-८९	कार्तिक शुक्ल ६	शनिवार	सूर्य सिद्धि दिवस
१३-११-८९	कार्तिक शुक्ल १५	सोमवार	छिन्न मस्ता जयन्ती
१८-११-८९	मार्गशीर्ष कृष्ण ६	शनिवार	तंत्र सिद्धि दिवस
०-११-८९	मार्गशीर्ष कृष्ण ८	सोमवार	काल भैरव अष्टमी
२५-११-८९	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	रविवार	वांछा सिद्धि दिवस
१-१२-८९	मार्गशीर्ष शुक्ल ३	शुक्रवार	सिद्धेश्वरी साधना दिवस
५-१२-८९	मार्गशीर्ष शुक्ल ७	मंगलवार	पद्मावती सिद्धि दिवस
११-१२-८९	मार्गशीर्ष शुक्ल १४	सोमवार	भूत पिशाच सिद्धि दिवस
१२-१२-८९	मार्गशीर्ष शुक्ल १५	मंगलवार	श्री त्रिपुर भैरवी जयन्ती
१७-१२-८९	पौष कृष्ण ५	रविवार	भुवनेश्वरी सिद्धि दिवस
२४-१२-८९	पौष कृष्ण १२	रविवार	धूमावती सिद्धि दिवस
३१-१२-८९	पौष शुक्ल ३	रविवार	बगला मुखी सिद्धि दिवस
७-१-९०	पौष शुक्ल ११	रविवार	पुत्रदा एकादसी

१०-१-९०	पौष शुक्ल १४	बुधवार	शाकम्भरी जयन्ती
१४-१-९०	माघ कृष्ण ३	रविवार	मकर संक्रांति
१८-१-९०	माघ कृष्ण ८	गुरूवार	मातंगी सिद्धि दिवस
२४-१-९०	माघ कृष्ण १३	बुधवार	षोडसी त्रिपुर सुन्दरी सिद्धि दिवस
३१-१-९०	माघ शुक्ल ५	बुधवार	बसन्त पंचमी
७-२-९०	माघ शुक्ल १३	बुधवार	विश्वकर्मा जयन्ती
९-२-९०	माघ शुक्ल १५	शुक्रवार	श्री ललिता जयन्ती
१४-२-९०	फाल्गुन कृष्ण ५	बुधवार	उच्छिष्ट गणपति सिद्धि दिवस
२३-२-९०	फाल्गुन कृष्ण १३	शुक्रवार	शिवरात्रि
२५-२-९०	फाल्गुन कृष्ण ३०	रविवार	हरगौरी सिद्धि दिवस
२८-२-९०	फाल्गुन शुक्ल ३	बुधवार	वैताल सिद्धि दिवस
१०-३-९०	फाल्गुन शुक्ल १४	शनिवार	होलिका दहन
१६-३-९०	चैत्र कृष्ण ५	शुक्रवार	अपूर्ण इच्छा पूर्ण सिद्धि दिवस
२६-३-९०	चैत्र कृष्ण ३०	सोमवार	सोमवती अमावस्या

इस वर्ष के पुष्य नक्षत्र

१५-४-८९	सूर्योदय से २ बजे तक
११-५-८९	दिन भर
७-६-८९	दिन भर
५-७-८९	सूर्योदय से दिन के ३ बजे तक
१-८-८९	सूर्योदय से दिन भर
२८-८-८९	सूर्योदय से दिन भर
२५-९-८९	सूर्योदय से ११ बजे तक
२२-१०-८९	सूर्योदय से ३ बजे तक
१८-११-८९	सूर्योदय से दिन भर
१६-१२-८९	सूर्योदय से १० बजे तक
१२-१-९०	सूर्योदय से दिन भर
८-२-९०	सूर्योदय से १२ बजे तक

चन्द्र ग्रहण

इस वर्ष ९-२-९० तदनुसार माघ शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार को पूर्ण खग्रास चन्द्र ग्रहण है। इसका सूतक दिन को २ बजे प्रारम्भ हो जायेगा रात्रि को ११ बजे चन्द्र ग्रहण प्रारम्भ होगा, १२ बज कर ४४ मिनट पर पूर्ण खग्रास चन्द्र दिखाई देगा, रात को २ बज कर २८ मिंनट पर ग्रहण समाप्त होगा तथा इसकी सूतक निवृत्ति रात्रि को ३ बज कर २७ मिनट पर होगी।

विश्व की सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय

सर्वथा पहली बार

कर्ण मातंगी साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना के बारे में तो भारत वर्ष के कई साधकों को जानकारी है, और कई शिष्यों ने इस साधना को सिद्ध भी किया है, कर्णपिशाचिनी साधना आज के युग में अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी साधना है।

इस साधना की विशेषता यह है, कि कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध करने पर किसी भी व्यक्ति, पुरूष या स्त्री को देखते ही उसके बारे में साधक मन ही मन जो प्रश्न पूछता है, उसका तुरन्त उत्तर साधक को उसके कान में मिल जाता है, इसीलिए इस साधना को कर्ण पिशाचिनी साधना कहते है।

यदि चमत्कार को ही नमस्कार है, तो उनके लिए 'कर्ण पिशाचिनी' साधना सर्व श्रेष्ठ साधना है, किसी मंत्री या अधिकारी को देखते ही इस साधना को सिद्ध किया हुआ व्यक्ति अपने मन में एक बार मंत्र का उच्चारण कर मन ही मन प्रश्न पूछता है कि इस सामने खड़े हुए व्यक्ति का क्या नाम है? या इसके घर का पता क्या है? अथवा इसकी पत्नी का नाम क्या है? तो देवी कर्ण पिशाचिनी साधक के कान में एक सैकण्ड में इन प्रश्नों के उत्तर दे देगी, यही नहीं अपितु यदि किसी स्त्री के बारे में उसके भूतकाल या उसकी बीती हुई घटनाओं के बारे में किसी प्रकार का कोई प्रश्न करे, तो तुरन्त उसका उत्तर मिल जाता है, कि इसका चरित्र कैसा है, इसने बचपन से लगाकर अब तक क्या क्या किया है, आदि कई ऐसी बातें है जो सर्वथा रहस्यमय होती है परन्तु इस साधना को सिद्ध करने पर साधक किसी भी रहस्य का उजागर एक ही सैकण्ड में कर लेता हैं।

और जब सामने वाला अपरिचित व्यक्ति या अधिकारी उसके जीवन के अन्तरंग क्षण या उसके जीवन की गोपनीय बातें सामने वाले के मुंह से सुनता है तो आश्चर्य चकित रह जाता है, उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता कि कोई ऐसी भी साधना है, जिसके द्वारा गोपनीय से गोपनीय तथ्य स्पष्ट हो सकते हैं, और वह सामने वाले के पैरों पर तुरन्त गिर जाता हैं, और उससे मित्रता गांठने की कोशिश करता है, उसका प्रयत्न यही रहता है, कि ऐसे व्यक्ति से मित्रता बनाये रखो, नहीं तो यह कभी भी भाण्डा फोड़ सकता है।

यहां रह कर भारत वर्ष के कई साधकों ने सफलता के साथ यह साधना सिद्ध की है, और आज वे समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण और सम्माननीय स्थान पर है। जब भी यहां शिविर लगते है, और सामान्य साधक जब कर्ण पिशाचिनी सिद्ध साधक को मिलते हैं, और उसके द्वारा अपने जीवन की गोपनीय घटनाओं को सुनते है तो वे भौचंक्के से रह जाते है, वास्तव में ही आज के युग में कर्ण पिशाचिनी साधना एक महत्वपूर्ण साधना हैं।

पर आज मैं इससे भी सरल और गोपनीय साधना- "कर्ण मातंगी" साधना का रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि गोपनीय होने के साथ साथ तुरन्त सिद्ध

होती है, जो साधक कर्ण मातंगी साधना सिद्ध कर लेता है, वह किसी भी व्यक्ति के जीवन के अन्तरंग रहस्यों को जान लेता है, उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता, साथ ही साथ यह साधना अत्यन्त सरल और सौम्य है, कोई भी पुरूष या स्त्री इस साधना को सिद्ध कर सकता है, एक बार सिद्ध होने पर इस साधना का प्रभाव जीवन भर बना रहता है।

अब तक यह साधना सर्वथा गोपनीय रही है, यद्यपि कई तांत्रिक ग्रंथों में इसका विवरण एवं उल्लेख तो आया है, पर इसके बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिली है। इस बार पत्रिका के पन्नों पर मैं इस गोपनीय साधना के रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूँ, जिससे कि साधक इसे सम्पन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

साधना रहस्य

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है और केवल तीन दिन की साधना हैं। इस साधना में साधक को चाहिए कि वह शुक्रवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने लोहे या स्टील की थाली में "सिद्ध कर्ण मातंगी यंत्र" रख दें। यह यंत्र अत्यन्त मंत्र युक्त एव सिद्ध होना चाहिए, ऐसे यंत्र का निर्माण करने पर व्यय १९५) रू. आ जाता है, आप कहीं से भी इस प्रकार का यंत्र पहले से ही प्राप्त कर के रख ले, अथवा पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस यंत्र को मंगवा ले।

इस यंत्र को थाली के मध्य में रख कर सामने एक बड़ा सा तेल का दीपक लगावे और साधक तेल के दीपक की लौ पर दृष्टि स्थिर करते हुए "कर्ण मातंगी मंत्र" की ३१ माला मंत्र जप करे। इस साधना में हरे रंग की हकीक माला का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार तीन रात्रि प्रयोग करे, रविवार की रात्रि को जब ३१ माला मंत्र जप पूरा हो जाय तो अपने हाथों से उस तेल के दीपक को बुझा दे और दीपक में जो तेल भरा हुआ है, उसे अपने पैरों की तलहटी में लगा ले, और उसके बाद उठ कर स्नान कर ले।

स्नान करके वापिस अपने आसन पर बैठे, और गले में वह 'कर्ण मातंगी यंत्र' पहिन ले इस यंत्र में किसी भी प्रकार का धागा या चैन पिरोई जा सकती है।

इसके बाद वहीं पर बैठ कर किसी लोहे की थाली में या लोहे के पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर तेल और राई मिला कर इसी मंत्र से एक हजार आहुतियां दें।

जब आहुतियां पूर्ण हो जाय तब पुन: स्नान कर ले, और उसी आसन पर बैठ जाय। इसके बाद उस माला से पुन: तीन माला मंत्र जप सम्पन्न करे।

ऐसा करते ही, कमरे में प्रकाश सा अनुभव होता है, और सामने अत्यन्त सौम्य देवी दृष्टिगोचर होती है, जो सुन्दर होने के साथ साथ अत्यन्त सम्मोहक होती है।

वह साधक को वचन देती है, कि तुमने मुझे मन्त्र से, और यज्ञ से सिद्ध किया है, मैं जीवन भर तुम्हारे लिए उपयोगी रहूँगी और तुम जो भी प्रश्न करोगे, मैं उस प्रश्न का उत्तर तुम्हारे कान में कहूँगी।

कर्ण मातंगी मन्त्र

ऐ नम: श्री मातगी अमोघे सत्य वादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नम:।

प्रात: काल उठकर साधक किसी कुंवारी कन्या को बुला कर उसे भोजन करावे और उसे यथा शक्ति दक्षिणा या लाल वस्त्र भेंट करे, इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है।

साधक इस साधना को अपने घर में या किसी मंदिर में अथवा कहीं पर भी सम्पन्न कर सकता है। इस साधना की विशेषता यह है कि यह तुरन्त सिद्ध होती है और असफलता के अवसर कम होते है। साथ ही साथ यह साधना सरल है और इससे साधक को किसी प्रकार की परेशानी या तकलीफ नहीं होती। इससे भी बड़ी बात यह है कि आज के युग में यह साधना अत्यन्त उपयोगी है।

इसके बाद जब भी साधक इसका प्रयोग करना चाहें तब अपने गले में पहने हुए यंत्र को दाहिने हाथ से स्पर्श कर मन ही मन उपरोक्त मंत्र का चार पांच बार उच्चारण करे और कर्ण मातगी का आहवान करे, जब "हां" की ध्वनि प्राप्त हो तब सामने वाले व्यक्ति या सामने रखे हुए फोटों से संबधित साधक मन ही मन जो भी प्रश्न करेगा, कर्ण मतंगी साधक के कान मे तुरन्त उसका उत्तर देगी जो कि पूर्णत: प्रामाणिक और सही होगा। तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि जो साधक कर्ण मातंगी साधना को सिद्ध कर लेता है, वह पूरे त्रैलोक्य पर शासन करने में समर्थ होता है और सफलता, विजय तथा लक्ष्मी उसके सामने हाथ बांधे खड़ी रहती है। ★

नवार्ण साधना प्रयोग

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवरात्रि प्रारम्भ हो रहा है, और भगवती दुर्गा की साधना में नवार्ण मंत्र का विशेष महात्म्य है। नवार्ण मंत्र के बारे में तो अधिकतर लोगों को ज्ञान है, परन्तु उसकी साधना और प्रयोग के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

आगे के पृष्ठों में, मैं सर्वमान्य साधना प्रयोग दे रहा हूँ, जो कि किसी भी साधक के लिए अनुकूल है।

विद्वानों ने कहा है, कि चाहे व्यक्ति शिव उपासक हो, या विष्णु उपासक, वह चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो, नवार्ण साधना तो उसके जीवन की उन्नति के लिए अनुकूल एवं सुखदायक है ही, इसके नव वर्ण अर्थात नव अक्षर होने से इसका नाम "नवार्ण" पड़ा और इसका प्रत्येक अक्षर अपने आप में विराट शक्ति पुंज लिये हुए है। इस ग्रन्थ में प्रत्येक अक्षर की साधना दी हुई है। इतने विस्तार में फिलहाल जाने की जरूरत नहीं है, परन्तु गुप्त चामुण्डा तंत्र में बताया गया है, कि नवार्ण मंत्र से नव अक्षरों को सिद्ध करने पर नौ लाभ तुरन्त अनुभव किये जा सकते है।

गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार नवार्ण मंत्र के ये नौ अक्षर या नौ बीज तथा उनसे संबधित फल प्राप्ति इस प्रकार से है।

१- ऐं

यह बीज नवार्ण मंत्र का पहला और सरस्वती बीज है, इसको सिद्ध करने पर स्मरण शक्ति तीव्र होती है, यदि बालक इस साधना को या इस बीज का उच्चारण करे तो निश्चय ही वह परीक्षा में सफलता प्राप्त करता है, सिर दर्द, माइग्रेन, आधा शीशी, आदि विकार और बीमारियां इस बीज के निरन्तर उच्चारण करने से ठीक हो जाती है, यहीं बीज अच्छा वक्ता बनने में, वाणी के द्वारा लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से समर्थ है।

२- ह्रीं

यह लक्ष्मी बीज है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। इस बीज की साधना करने से या इसका मंत्र जप करने से दरिद्रता दूर होती है, निरन्तर आर्थिक उन्नति होने लगती है और आर्थिक संबंधी रुके हुए काम ठीक हो जाते है। जो साधक निरन्तर केवल इसी बीज का उच्चारण करता है, उसका व्यापार बढ़ने लगता है, आर्थिक स्त्रोत मजबूत होते है और अनायास धन प्राप्ति के विशेष अवसर बन जाते है।

३- क्लीं

यह काली बीज है, शत्रुओं का संहार करने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने,

और मन के विकारों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण बीज है। जो इस बीज का उच्चारण कर कोर्ट कचहरी में जाता है, तो उस दिन उसके अनुकूल वातावरण बना रहता है। काली को प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए यह अपने आप में सिद्ध बीज है।

४- चा

यह सौभाग्य बीज है, और इसकी महत्ता शास्त्रों ने एक स्वर से स्वीकार की है। सौभाग्य की रक्षा, पति की उन्नति, पति के स्वास्थ्य और पति की पूर्ण आयु के लिए यह अपने आप में अद्वितीय बीज है। इसी प्रकार यदि पत्नी बीमार हो या उसे किसी प्रकार की तकलीफ हो, तो इस अक्षर का निरन्तर जप करने से या पत्नी को इस बीज मंत्र से सिद्ध करके जल पिलाने से उसके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक अनुकूलता आने लगती है, गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए यह बीज मंत्र ज्यादा उपयोगी है।

५- मुं

यह आत्म मंत्र है, आत्मा की उन्नति, कुण्डलिनी जागरण, जीवन की पूर्णता और अन्त में ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार के लिए यह मंत्र सर्वाधिक उपयुक्त एवं अद्वितीय है। उच्च कोटि के सन्यासी निरन्तर इस मंत्र का जप करते हुए, अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करते हैं, जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का उच्चारण करता रहता है, उसकी कुण्डलिनी शीघ्र ही जाग्रत हो जाती है।

६- डा

यह सन्तान सुख बीज है, और भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक प्रिय बीज है यदि पुत्र उत्पन्न न हो रहा हो या संतान बाधा हो, अथवा किसी प्रकार की पुत्र से संबंधित तकलीफ हो तो, इस बीज मंत्र की सिद्धि करने से अनुकूलता प्राप्त होती है। पुत्र के स्वास्थ्य के और उसकी दीर्घायु के लिए भी इसी बीज मंत्र का सहारा लिया जाता है।

७- यै

यह भाग्योदय बीज है, और मानव जीवन में इस बीज का सर्वाधिक महत्व है, यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो, पग पग पर बाधाएं आ रही हो, कोई काम भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहा हो तो इस मंत्र को विशेष महत्व दिया गया है। जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का जप करता रहता है, उसका शीघ्र भाग्योदय हो जाता है, और वह अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

८- वि

यह सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चता श्रेष्ठता, और सफलता का बीज मंत्र है। किसी प्रकार के पुरस्कार प्राप्त करने, समाज में सम्मान और यश प्राप्त करने, राज्य में उन्नति, और सफलता पाने के लिए इस बीज मंत्र का उपयोग किया जाता है। जो साधक निरन्तर इस बीज का प्रयोग करता है, या इसकी साधना करता है, वह निश्चय ही राज्य सम्मान एवं राज्य उन्नति प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

९- च्चे

यह सम्पूर्णता का बीज है, जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण और सफल हो, चाहे स्वास्थ्य धन, परिवार यश, सुख, सौभाग्य, सन्तान, भाग्योदय और सफलता का तत्व हो, इस बीज में सब कुछ समाहित है, इसीलिए इसको "बीज राज" कहा गया है। जो साधक इस बीज मंत्र की साधना करता है, वह निश्चय ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

नवार्ण मंत्र

इस प्रकार प्रत्येक बीज का अध्ययन करने से नवार्ण मंत्र इस प्रकार से बनता है-

ऐं ह्रीं क्लीं चा मुं डा यै वि च्चे

शास्त्रों में कहा गया है, कि नवार्ण मंत्र का जप करते समय इसके प्रारम्भ में "ॐ प्रणव" नहीं लगाना चाहिए। जिस प्रकार से मंत्र दिया गया है, उसी प्रकार से मंत्र जप करना चाहिए।

नवार्ण मंत्र सिद्धि नौ दिनों में सवा लाख मंत्र जप करने से सफलता मिलती है। सवा लाख मंत्र का तात्पर्य १२५० मालाएं मंत्र जप करने से सवा लाख मंत्र जप हो जाता है, और इस साधना को किसी भी महीने की त्रयोदशी से प्रारम्भ कर अगले नौ दिनों में यह नवार्ण मंत्र सिद्ध किया जा सकता है। साधना काल में साधक पीली धोती पहिन, उत्तर की ओर मुंह कर सामने भगवती जगदम्बा का चित्र स्थापित कर साधना कर सकता है। साधना के समय तेल का दीपक लगा रहना चाहिए, यह तेल का दीपक अखण्ड होना चाहिए।

शास्त्रों में कहा गया है कि-

वाक् चैव काम: शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते ।
तदार्थेषु च मन्त्रेषु प्रणवं नैव योजयेत् ।।

अर्थात जिन मंत्रों के प्रारम्भ में १-ऐं, २- क्लीं, ३-ह्रीं और ४-श्रीं अक्षर लगा हो, उन मन्त्रों के आदि में ॐ नहीं लगाना चाहिए।

नवार्ण मंत्र विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग का उच्चारण करे और जल को सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री नवार्ण–मन्त्रस्य ब्रह्म–विष्णु–रूद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दासि, श्री महाकाली – महालक्ष्मी–महासरस्वत्यौ देवताः, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्री महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती–प्रीत्यर्थे जपे बिनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

निम्न उच्चारण करते हुए बताये हुए शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करना चाहिए।

ब्रह्म–विष्णु–रुद्र ऋषिभ्यो नमः–शिरसि ।
गायंत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे ।
महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती–देवताभ्यो नमः –हृदि ।
ऐं बीजाय नमः गुह्ये ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।
क्लीं कीलकाय नमः–नाभौ ।

कर न्यास

कर न्यास करने से साधक स्वयं मंत्र मय बन जाता है. उसके बाहर भीतर की शुद्धि हो जाती है तथा दिव्य बल प्राप्त करने से वह साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है।

ऐं–अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ह्रीं–तर्जनीभ्यां नमः ।
क्लीं–मध्यमाभ्यां नमः ।
चामुण्डायै–अनामिकाभ्यां नमः ।
विच्चे–कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे–करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास

ऐं– हृदयाय नमः ।
ह्रीं–शिरसे स्वाहा ।
क्लीं-शिखायै वषट् ।
चामुण्डायै–कवचाय हुं ।
विच्चे–नेत्र–त्रयाय वौषट् ।
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै–अस्त्राय फट् ।

अक्षर न्यास

ऐं नमः-शिखायां । ह्रीं नमः-दक्षिण नेत्रे । क्लीं नमः-वाम-नेत्रे । चां नमः- दक्षिण-कर्णे । मुं नमः-वाम कर्णे । डां नमः-दक्षिण-नासा-पुटे । यैं नमः-वाम-नासा - पुटे । विं नमः –मुखे । च्चे

नमः - गुह्ये।

नवार्ण मंत्र ध्यान

"वाग्"-बीजं हि दीप-समान-दीप्तम्। मायौ ति-तेजो द्वितीयार्क-विम्बम्।

"कामं" च वंश्वानर-तुल्य-रूपम्। प्रतीयमानं तु सुखाय चिन्त्यम्।

"चा. शुद्ध-जाम्बू-नद-तुल्य-कान्तिम्। "मु" पंचमं रक्त-तर प्रकल्पम्।

"डा" षष्टमुग्रार्ति-हरे सुनीलम्। "ये" सप्तमं कृष्ण-तरं रिपुघ्नम्।

"वि" पाण्डुर चाष्टममादि-सिद्धिम्। "च्चै" धूम्र-वर्ण नवमं विशालम्।

एतानि बीजानि नवात्वकस्य। जपात् प्रवध्यः सकलार्थ-सिद्धिम्।

नवार्ण मंत्र सिद्धि जीवन की श्रेष्ठ सिद्धि है, स्थूल रूप से नवार्ण मंत्र का अर्थ है, हे चित्त-स्वरूपिणी महा-लक्ष्मी! हे आनन्दरूपिणी महाकालि! पूर्णत्व प्रदान करने वाली हे महासरस्वती! ब्रह्म-विद्या प्राप्त करने के लिए हम साधक तुम्हारा ध्यान करते है, है महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके! आपको नमस्कार है। आप मेरे अन्दर अविद्या रूपी रज्जु की दृढ़ गांठ को खोल कर मुझे सभी दृष्टियों से पूर्ण मुक्त कर दें।

खड्ग माला

नवार्ण मंत्र की सिद्धि खड्ग माला से ही सम्पन्न हो सकती है, 'गुप्त चामुण्डा तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि-

खड्गान विधिवत् सम्पूज्य हस्तेन च धृतेन वै।
अष्टादश-महा-द्वीपे साम्राज्य-भोक्ता भवि-ष्यति।

अर्थात् खड्ग माला से विधिवत पूजा, अर्चना कर उससे मंत्र जप कर उस खड्ग माला को जो साधक धारण करता है, वह अठारह द्वीप युक्त महा द्वीप का सम्राट होता है तथा पूर्ण रूप से साम्राज्य सुख को भोगने वाला होता है।

यह खड्ग माला विशेष मनकों से तैयार की जाती है, और इसका प्रत्येक मनका गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार सिद्ध किया जाता है, जिससे यह माला अत्यन्त तेजस्वी, दिव्य और अपराजिता हो जाती है। उच्च कोटि के सम्राट और ऋषियों ने हमेशा इस माला को धारण किया है, ऐसा जातक जीवन के किसी भी क्षेत्र में असफल नहीं होता। उसे अपने जीवन में धन, सुख, सौभाग्य, स्वास्थ्य, रोग निवृत्ति, शत्रु भय निवारण, भाग्योदय, एवं समस्त सुखों की निरन्तर प्राप्ति होती रहती है।

गुप्त चामुण्डा तंत्र में बताया है, कि जो वास्तव में ही सौभाग्यशाली होते है, वे साधक ही इस प्रकार की दिव्य और तेजस्वी माला धारण किये रहते है।

पत्रिका कार्यालय ने पाठकों की सुविधा एवं साधकों की सफलता के लिए कुछ खड्ग मालाओं को तैयार कर-वाया है, एक माला पर व्यय मात्र २४०) रू. आता है। यह माला नवार्ण साधना के लिए तो जरूरी है ही, इसके माध्यम से संसार की कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है, साथ ही साथ इसका धारण करना भी अपने आप में सौभाग्य माना जाता है।

खड्ग माला से साधक उपरोक्त नवार्ण मंत्र का जप करे और उस दिन का मंत्र जप पूर्ण होने पर माला के सुमेरू पर तिलक करते हुए निम्न उच्चारण करे -

ॐ अक्ष मालाधिपतये सु सिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ-साधिनि साधय साधय सर्व-सिद्धिं परि-कल्पय परि-कल्पय मे स्वाहा॥

जप समाप्ति के बाद उत्तर न्यास करे अर्थात् प्रारंभ में जिस प्रकार से कर न्यास आदि किया था, उसी प्रकार से सम्पन्न कर अंत में भगवती जगदम्बा को इस प्रकार प्रार्थना करे-

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृत जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्-प्रसादात् महेश्वरि॥

उपरोक्त श्लोक को पढ़ कर हाथ में जल ले कर भगवती जगदम्बा के सामने जल गिराते हुए, पूर्ण सफलता की भावना करे।

अब

सौन्दर्य में भी सुगन्ध सम्भव है

सौन्दर्य प्रकृति का नारी को सबसे बड़ा वरदान है परन्तु जो समझदार स्त्री होती हैं, वह इस सौन्दर्य को लम्बे समय तक बचाये रख सकती है, और कुछ उपायों से उस सौन्दर्य को अद्वितीय और सुगन्धमय बना सकती है।

पत्रिका में समय समय पर हम ऐसे प्रामाणिक और अनुभवी प्रयोग देते रहते है, जो कि तुरन्त प्रभाव युक्त तो है ही, प्रत्येक स्त्री के लिए आवश्यक एवं अनुकूल भी है, यही नहीं अपितु इन सौन्दर्य प्रसाधनों में किसी प्रकार का कोई विशेष व्यय भी नहीं लगता।

जब से हमने इस स्तम्भ को शुरू किया है, हमारे पास इससे संबंधित सैकड़ों पत्र आने लगे है, और सभी ने इस बात को स्वीकार किया है, कि पत्रिका में दी हुई इन विधियों से उनके सौन्दर्य में आश्चर्यजनक निखार आया है।

आगे की पंक्तियों में कुछ और महत्वपूर्ण उपाय दिये जा रहे है, जो कि प्रामाणिक है, और इनका प्रयोग करने पर पूर्णतः अनुकूलता प्राप्त हुई है।

१. चेहरे को गुलाबी बनाइये

कभी कभी सर्दी में चेहरा सूखा पड़ जाता है, या उसका गुलाबीपन मिट जाता है, ऐसा चेहरा आकर्षण हीन पीला पीला सा निर्जीव दिखाई देता है।

इसके लिए आप शाम को कच्चे दूध में डबल रोटी के एक टुकड़े को भिगो दीजिये और सारी रात उसे भीगने दीजिये, सुबह इसे मथ कर इसमें नींबू की बूंदे डाल कर अपने चेहरे पर मलिये।

आप दो चार दिन में ही आश्चर्यजनक परिवर्तन अनुभव करेगी और आपका चेहरा गुलाब की तरह खिला हुआ आकर्षक और सौन्दर्ययुक्त दिखाई देने लगेगा।

२- आंखों पर से ऐनक हटाइये न !

चाहे आपका चेहरा कितना ही सुन्दर हो, पर आंखों पर ऐनक होने से उसका सारा सौन्दर्य समाप्त हो जाता है, इसके लिए एक महत्वपूर्ण उपाय अनुभव में आया है।

प्रातः काल उठ कर आधा गिलास गाजर का रस

निकालिये और उसमें आधा नींबू काट कर उसका रस तथा एक कप पालक का रस उसमें मिला कर उसे पी लीजिये।

ऐसा एक महीने तक पीजिये और नित्य प्रातः काल उठकर अपनी आंखों पर पानी के छींटे दस पन्द्रह बार मारिये, निश्चय ही एक महीने भर में आपकी आंखों पर से ऐनक उतर जायेगी।

३. आप अपना दुबलापन दूर कर सकती है।

छरहरा होना अच्छी बात है, परन्तु यदि आप ज्यादा दुबली पतली है, तो आपका सारा सौन्दर्य व्यर्थ हो ज़ायेगा, ऐसा लगेगा कि जैसे सूखी हुई लकड़ी पर कपडे पहना दिये हो। शरीर की पौष्टिकता और मांसल शरीर होना सौन्दर्य का लक्षण हैं।

इसके लिए आप नित्य सुबह उठकर एक केला खा लीजिये और ऊपर एक गिलास गर्म दूध पी लीजिये इसके साथ ही साथ दोपहर को काली मिर्च लगाकर आधा किलो टमाटर खाने आवश्यक है।

आप एक महीने तक इस प्रयोग को कर के देखिये आप खुद अपने शरीर में चमत्कार अनुभव करेगी।

४- बालों को लम्बे और चमकीले बना सकती हैं

आप आधा किलो हरे आंवलों का रस निकाल कर उसे सौ ग्राम घी में धीमी आंच में पकाइये और फिर उसे छान कर बोतल में भर कर रख दीजिये।

नित्य रात को सोते समय इसे बालों की जड़ में लगाइये और आप चाहे तो सुबह बालों को धो सकती है।

ऐसा करने पर कुछ ही दिनों में आपके बाल लम्बे और चमकीले बन जायेंगे।

५- मासिक धर्म की गड़बड़ी दूर कीजिये

हां, इसके लिए कीमती और महंगी दवाइयां खाने की जरूरत नहीं है, यदि मासिक धर्म अनियमित हो या पेट में भयानक दर्द उठता हो, अथवा कमर में दर्द रहता हो तो मासिक धर्म के दिनों में नित्य प्रातः काल दस ग्राम राई पीस कर उसकी फक्की ले लीजिये और पानी पी लीजिये।

आप स्वयं देख लेंगी कि आपके जीवन में आश्चर्य-जनक परिवर्तन हुआ है।

६- बालों को रेशम की तरह मुलायम बनाइये

कई स्त्रियों के बाल मोटे और रूखे होते है, किसी किसी के बाल फटे हुए दिखाई देते है, इसके लिए एक चमत्कारिक प्रयोग है।

और वह है, हरे धनिये का रस निकाल कर एक कप में रख लीजिये और रात को सोते समय आंवले पीस कर उसकी फक्की लीजिये और हरे धनिये के रस को बालों की जड़ में लगाइये, ऐसा आप कुछ ही दिन करे तो आप स्वयं देखेंगी कि आपके बालों से संबंधित सारी समस्याएं हल हो गई है, और आपके बाल चमकीले, सुन्दर तथा मुलायम हो गये हैं।

७- क्या आपके बालों में रूसी है ?

तो अवश्य ही आप इससे दुखी होंगी पर इसके लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। आप ताजे नींबू का रस निकाल कर उसमें बहुत थोड़ी सी चीनी मिला लीजिये और इसे बालों की जड़ में लगाइये, ऐसा आप कुछ दिनों तक कीजिये तो निश्चय ही आपके सिर से

रूसी समाप्त हो जायेगी और भविष्य में होने की संभावना भी नहीं रहेगी।

८- पथरी का इलाज आप स्वयं कीजिये।

इसके लिए फालतू खर्च या आपरेशन कराने की जरूरत नहीं है, आप नित्य चन्दलाई की सब्जी बना कर खाइये और यदि यह सम्भव न हो तो रोज सुबह शाम बथुऐ का साग खाइये और केवल पन्द्रह दिनों के बाद आप एक्सरे करा के देख लीजिये, आपके शरीर में जो पथरी थी, वह गल कर समाप्त हो गई है।

९- चेहरे के दाग दूर कीजिये

यदि आप सुन्दर भी है, पर चेहरे पर दाग मस्से या धब्बे है तो आपका सारा सौन्दर्य व्यर्थ हो जाता है।

पर इसके लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, आप रात को सौ ग्राम चने की दाल भिगो दीजिये और सुबह उठकर उस पानी को फेंक दीजिये तथा दाल के साथ शहद मिलाकर सेवन कर लीजिये।

आप कुछ दिनों तक ऐसा करें और शीशे में अपना चेहरा देख लें आपको स्वयं को चमत्कार अनुभव होने लगेगा।

१०- यदि मासिक धर्म खुल कर नहीं आता हो तो

आप इसके लिए बाजार से प्राप्त गोलियां या केप्स्यूल मत लीजिये, केवल मासिक धर्म के समय गुने-गुने पानी में थोड़ी सी पीसी हुई हींग मिलाकर पी लीजिये, ऐसा तीन दिनों तक कीजिये, यह समस्या हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगी।

११- बालों को झड़ने से रोकिये।

यदि इसी प्रकार बाल झड़ते रहे, तो निश्चय ही एक दिन आप गंजी हो जायेगी, तो इसके लिए अभी से इस उपाय को कीजिये न।

आप तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिला कर बालों की जड़ में लगाइये और चार पांच घण्टे लगे रहने दीजिये बाद में गुने-गुने पानी से बालों को धो दीजिये।

कुछ ही दिनों में आपके बालों का झड़ना बन्द हो जायेगा और साथ ही साथ आपके बाल सुन्दर आकर्षक और लम्बे भी हो जायेंगे।

१२- क्या आपका पेट फूला हुआ है

तब तो बहुत गड़बड़ है, इससे तो आपका सारा सौन्दर्य ही नष्ट हो रहा है, पर इसके लिए आप इस उपाय को आजमाइये।

मूली के तीस ग्राम बीज आधे किलो पानी में उबालिये, जब पानी आधा रह जाय तब उसे छान कर थोड़ा ठण्डा होने पर पी लीजिये।

ज्यादा नहीं, आप केवल पन्द्रह दिनों तक इस प्रयोग को कीजिये और आप स्वयं इससे संबधित चमत्कार देख लीजिये।

१३- अद्वितीय वक्षस्थल के लिए

यदि वक्षस्थल कमजोर, छोटे और आकर्षणहीन हों तो लाख दवाइयां करने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता पर इसके लिए आप निम्न प्रयोग आजमा सकती है।

प्रातः काल उठकर पचास ग्राम करेले के रस में एक ताजा नींबू निचोड़ कर उसका रस करेले के रस में मिला कर पी लीजिये।

ऐसा लगभग एक महीने तक कीजिये और आप स्वयं देख लीजिये कि यह प्रयोग आपके लिए कितना शानदार और महत्वपूर्ण है।

१४- तरोताजा और उमंग युक्त रहिये

कुछ स्त्रियां मरी मरी बेजान सी उमंगहीन दिखाई देती है, उनसे सामान्यतः बातचीत करने की इच्छा ही नहीं होती, उत्साह युक्त और उमंग के साथ दिखाई देने वाली स्त्री ही सौन्दर्ययुक्त मानी जाती है।

इसके लिए आप नित्य प्रातः काल उठकर तीन चम्मच शुद्ध शहद लेकर ऊपर एक गिलास दूध पी लीजिये कुछ ही दिनों में आप में और आपके व्यवहार में आश्चर्यजनक अन्तर अनुभव होने लगेगा।

१५- सुन्दर शिशु उत्पन्न कीजिये

यदि आप चाहती है, कि आपका बच्चा पुष्ट और सुन्दर उत्पन्न हो तो गर्भावस्था के पांचवे महीने के बाद से नित्य दोपहर को एक गिलास दूध में केसर मिला कर पीजिये निश्चय ही आप समय पर एक पुष्ट और सुन्दर शिशु को जन्म देने वाली मां बन सकेगी। ★

सर्व सिद्धि प्रदाय

श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द प्रयोग

●●●●●★★★★★★★★★★★●●●●●●

--योगीराज विश्वरूपानन्द जी महाराज

इस बात का मुझे गर्व है, कि मैं बाल्यावस्था से ही सन्यासी हुआ और अब जीवन के ८० वर्षों से भी ज्यादा आयु प्राप्त करने के बाद भी मुझे इस बात का संतोष और गर्व है, कि मैंने अपने जीवन में जो साधनाएं चाही थी, वे प्राप्त हुई, जिन सिद्धियों को मैं वरण करना चाहता था, उन सिद्धियों को मैंने हस्तगत किया और साधना की उन ऊंचाइयों को स्पर्श किया जो मेरे जीवन की धरोहर है।

मुझे अपने जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य इस बात से हुआ कि मुझे सन्यासी जीवन के प्रारम्भ में अद्वितीय योगीश्वर श्री निखिलेश्वरानन्दजी जैसे महायोगी का सानिध्य प्राप्त हुआ, उनकी कठिन एवं कठोर परीक्षा में सफल हुआ, और उनका प्रिय शिष्य कहलाने का गौरव प्राप्त कर सका ।

मैं ही नहीं अपितु हजारों–हजारों सन्यासी उन्हें 'आराध्य' मानते है हजारों–हजारों सन्यासी आज भी उनके एक संकेत पर अपने आपको फना करने के लिए तैयार है, और उनकी एक झलक देखने के लिए, दो चार क्षण उनके साथ व्यतीत करने के लिए अपना सब कुछ पुण्य भी लुटाने के लिए तैयार है। ऐसे ही योगीराज के जिस दिन मैंने दर्शन किये थे, वह दिन मेरे जीवन का सौभाग्यदायक दिन था, जिस दिन मैंने उन्हें गुरु रूप में प्राप्त किया, वह मेरे पिछले बीस जन्मों का सबसे श्रेष्ठ महत्वपूर्ण और दुर्लभ क्षण था , उनके सानिध्य में मैंने

उन सिद्धियों को प्राप्त किया, जो कि वास्तव में ही अगम्य अगोचर और अद्वितीय है।

इस बार शिवरात्रि के पर्व पर उनका आध्यात्मिक संकेत प्राप्त होने पर मैं उनके गृहस्थ स्वरूप को साक्षात देखने का सौभाग्य प्राप्त कर सका, वास्तव में ही वे अपने आप में अद्वितीय है, जिसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती, यदि वे सन्यास जीवन में रहे है, तो सन्यासी के आदर्शों और तत्वों की कसौटी पर पूर्णतः खरे उतर कर शंकराचार्य की उस परम्परा को पुनः जीवित कर दिया था कि सन्यास जीवन किस प्रकार और किन आदर्शों के साथ यतीत किया जा सकता है और अब, जब कि मैं उन्हें गृहस्थ जीवन में देख रहा हूं, तो अनुभव कर रहा हूं, कि वे गृहस्थ जीवन के तत्वों को पूर्णतः आत्मसात किये चार आश्रमों में से गृहस्थ जीवन या गृहस्थ आश्रम को भी पूर्णता के साथ सम्पन्न कर रहे है। इस गृहस्थ जीवन की समस्याओं, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों को भी वे सामान्य मानव की तरह ले रहे है, सामान्य की तरह उनका समाधान ढूंढते है, चुनौतियों का सामना करते है, सामान्य मानव की तरह ही संघर्ष कर उसमें सफलता प्राप्त कर रहे है।

मैं समझता हूं कि वे सब यह इसीलिए कर रहे है कि वे अपने शिष्यों को यह दिखा देना चाहते हैं, कि गृहस्थ जीवन की समस्याओं को झेलते हुए भी साधना की जा सकती हैं। गृहस्थ की चुनौतियों का सामना करते हुए भी पूर्णतः साधु जीवन या वैराग्य जीवन व्यतीत किया जा सकता है। गृहस्थ की झंझटों का सामना करते हुए भी साधना काल में सूक्ष्म प्राणों से सर्वत्र विचरण किया जा सकता है, और अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया जा सकता है। पूर्ण गृहस्थ जीवन का गरल पीते हुए भी मुस्कराया जा सकता है, और आनन्द के साथ जीवन को पार लगाया जा सकता है।........यह सब कुछ मैंने इस बार शिवरात्रि के अवसर पर कुछ क्षण उनके साथ बिताने पर अनुभव किया।

वेद व्यास ने श्रीमद भागवत में एक स्थान पर कहा है, कि भगवान श्री कृष्ण सोलह कला पूर्ण ब्रह्म के साक्षात् स्वरूप होते हुए भी देवकी के गर्भ से इसीलिए जन्म लिया कि वे यह दिखा देना चाहते थे, कि सामान्य बालक भी आगे चल कर गीता तत्व का उपदेश देने वाला पुरुषोत्तम बन सकता है। उन्होंने सामान्य बालक की तरह ही सान्दीपन आश्रम में शिक्षा प्राप्त की, जीवन के घात प्रतिघातों से जूझे, जीवन की समस्याओं का और चुनौतियों का सामान्य मानव की तरह मुकाबला किया और सामान्य मानव की तरह ही गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए पूर्ण ब्रह्म, भगवान श्री कृष्ण और योगीराज कहलाये, इन सारे कार्य कलापों में उन्होंने एक बार भी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया, अपने ब्रह्मत्व का उपयोग नहीं किया, वे सामान्य मानव की तरह ही रहे और सामान्य मानव की तरह ही जीवन व्यतीत किया।

मैं इसी की पुनरावृत्ति वर्तमान जीवन में भी देख रहा हूं, नित्य आने वाली बाधाओं और चुनौतियों के हल करने में उन्होंने एक बार भी अपनी साधना शक्ति का सहारा नहीं लिया, एक बार भी उन्होंने दुर्लभ सिद्धियों का प्रयोग गृहस्थ जीवन की समस्याओं को सुलझाने में नहीं किया, क्योंकि वे सामान्य गृहस्थ शिष्यों के बीच हैं, और सामान्य गृहस्थ में रहते हुए गृहस्थ की समस्याओं से जूझना चाहते हैं, और अपने कार्यों से शिष्यों को दिखा देना चाहते हैं, कि एक सामान्य साधक भी सफल गृहस्थ जीवन व्यतीत करता हुआ, साधना की ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है, अपने जीवन की दुर्लभ साधनाओं को बचाये रख सकता है, और गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी सन्यासी की तरह जीवन के क्षण व्यतीत कर सकता है।

मैं हतप्रभ हूं कि एक व्यक्ति दो सर्वथा विभिन्न जीवन जीते हुए भी प्रत्येक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है, यह मैंने पहली बार ही अनुभव किया, उनका सन्यासी जीवन जहां सभी दृष्टियों से पूर्ण और तेजस्वी

रहा है, तो गृहस्थ जीवन भी पूर्ण शान्त एवं आनन्दप्रद हों। दोनों ही रूपों में पूर्णता प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है, परन्तु इन कठिनइयों के बीच भी जो अपने आपको निर्विकल्प रूप से बचाये रख सकते है, संभवतः वे ही पूर्ण कहलाने के अधिकारी होते है।

सन्यासी जीवन में हम सभी सन्यासी शिष्य सिद्धाश्रम के अत्यन्त तेजस्वी योगीराज परमहंस स्वामी महारूपा जी से, जो "स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी साधना प्रयोग" प्राप्त किया था, और जिस साधना को सम्पन्न कर हम सभी सन्यासी शिष्यों ने इस पूर्णता को प्राप्त की थी, जो विशेष रूप से स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी के लिए ही यह प्रयोग विधि बनाई गई थी, जो प्रयोग विधि महा तेजस्वी योगीराज महारूपा जी से प्राप्त हुई थी, और जिसके माध्यम से साधनाओं में सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त करने में हम लोगों ने सफलता पाई थी, उसी प्रयोग विधि को मैं इस बार पूज्य गुरुदेव से क्षमा याचना करते हुए, इस गोपनीय विधि को स्पष्ट कर रहा हूं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानन्द मंत्रस्य भगवान श्री महारूपा ऋषि गायत्री छन्द निखिलेश्वरानन्द योगीश्वर्यै, क्लीं बीजम्, श्रीं शक्ति ऐं कीलकं, प्रणवो ॐ व्यापक मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री महारूपा ऋषये नमः - शिरसि ।
गायत्री छन्द से नमः - मुखे ।
निखिलेश्वरानन्द ऋषिभ्यो नमः- हृदि ।
क्लीं बीजाय नमः - गुह्ये ।
श्रीं शक्तये नमः - नाभौ ।
ऐं - कीलकाय नमः - पादयोः ।
ॐ व्यापकाय नमः - सर्वांगें ।
मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सव सिद्धि सौभाग्य वृद्धयथ मत्र जपे विनियोगाय नमः –पुष्पांजली ।

षडंग न्यास	कर-न्यास	अंग न्यास
ॐ ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राणात्मन	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
"निं"	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हूं
निखिलेश्वरानंदाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमः	कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

मानस पूजन

१- ॐ "लं" पृथिव्यात्मक गन्धं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः – अनुकल्पयामि ।
२- ॐ "हं" आकाशात्मकं पुष्पं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।
३- ॐ "यं" वायव्यात्मकं धूपं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।
४- ॐ "रं" वन्ह्यात्मकं दीपं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।
५- ॐ "वं" अमृतात्मकं नैवेद्यं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।
६- ॐ "शं" शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणात्मन "निं" सर्व सिद्धि प्रदाय निखिलेश्वरानंदाय नमः
(सवा लाख मंत्र जप से सिद्धि)

निखिलेश्वरानंद पंच रत्न स्तवन

ॐ नमस्ते सते सर्व-लोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय ।
नमो द्वैत-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ॥१॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम्, त्वमेकं जगत्-कारण विश्व-रूपम् ।
त्वमेक जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकम्, परेषां परं रक्षकं रक्षकानाम् ॥३॥
परेशं प्रभो सर्व-रूपाविनाशिन्, अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व, जगद्-भासकाधीश पायादपायात् ॥४॥
तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः, तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
तदेकं निधानं निरालम्बमीशम्, भवाम्भोधि-पोत शरण्यं व्रजामः ॥५॥
पंच रत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मणः परमात्मनः । यः पठेत् प्रयतो भूत्वा ब्रह्म सायुज्य माप्नुयात् ॥६॥

अर्थात् हे गुरुदेव ! आप मेरे जीवन के आराध्य हो, आप नित्य हो, समस्त लोकों के आश्रय हो, आपको नमस्कार करता हूं । हे योगी राज ! आप ज्ञान स्वरूप हो, विश्व की आत्मा स्वरूप हो, आप अद्वेत तत्व प्रदायक मुक्तिदायक आपको नमस्कार है, आप सर्व व्यापी निर्गुण ब्रह्म हो, सगुण रूप में आप हम समस्त शिष्यों के सामने उपस्थित हो, आपको नमस्कार है।

आप ही हम समस्त शिष्यों के एक मात्र "शरण्य" अर्थात् आश्रय हो, आप इस संसार में हमारे लिए अद्वितीय वरणीय हो, आप ही समस्त सिद्धियों के एक मात्र कारण हो, आप विश्व रूप हो, आप के मुंह में और कण्ठ में सम्पूर्ण विश्व समाया हुआ है जिसे हमने कई बार अनुभव किया है। आप ही समस्त सिद्धियों के संसार के श्रेष्ठी कर्ता, निर्माण, कर्ता, पालन कर्ता और संहार कर्ता हो। आप निश्चल और विविध कल्पनाओं से रहित पूर्णता प्राप्त षोडश कला युक्त पूर्ण पुरुष हो, आपको हम शिष्यों का नमस्कार है।

आप भय के भी भय हो, अर्थात् आपके नाम का स्मरण करते ही भय समाप्त हो जाता है, आप विपत्तियों के लिए विपत्ती स्वरूप हो, आपको देखते ही या आपका नाम स्मरण करते ही हम लोगों की विपत्तियां समाप्त हो जाती हैं। हम सब शिष्यों की आप एक मात्र गति हो। आप पवित्रता के साक्षात् स्वरूप हो, उच्च पद पर जितनी भी महाशक्तियां है, आप उनके आधार स्वरूप हो, आप संसार के सभी श्रेष्ठ पदार्थों से प्रेरित हो, और रक्षकों के पूर्ण रूप से रक्षक हो, हम सब शिष्य आपको भक्ति भाव से प्रणाम करते है।

हे, तपस्वी, हे प्रभु, समस्त शिष्यों के हृदय में विराजमान अविनाशी रूप में रहते हुए, समस्त शिष्यों का कल्याण करने वाले और समस्त प्रकार का इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण करने वाले आप पूर्ण रूप से अगोचर होते हुए भी हम सब लोगों के सामने साक्षात देह रूप में उपस्थित हो। हे सत्य स्वरूप, हे अचिन्त्य, हे अक्षर, हे व्यापक, हे न कहने वाले तत्व, हे ब्रह्म स्वरूप, हे मेरे आराध्य, हे मेरे प्राणों में निवास करने वाले, हम समस्त शिष्य आपके चरणों में है, आप हमें अपनी भक्ति, अपना ज्ञान, और अपना स्नेह प्रदान करें, हम आपको भक्ति भाव से प्रणाम करते हैं।

हम तो और किसी इष्ट को नहीं जानते, न तो हमें मंत्र का ज्ञान है, और न तंत्र का, न हमें पूजा विधि आती है, और साधना रहस्य, हमें तो केवल गुरु मंत्र का जप करने में ही समर्थ है, पल पल पर आप द्वारा बिखेरी हुई माया से हम कई बार भ्रमित हो जाते है, और आपको सामान्य मानव समझने की गलती कर बैठते है, आपको सामान्य मानव की तरह हंसते और उदास होते हुए देखते और विचरण करते हुए, कहते और सुनते हुए जब अनुभव करते है, तो हम सामान्य शिष्य भ्रम में पड़ जाते है, और हमारा सारा ज्ञान उस एक क्षण के लिए तिरोहित हो जाता है। हम बार बार जन्म लेते है, संसार के दुखों में संसार की समस्याओं और गृहस्थ की परेशानियों में डूबते उतरते हुए आपका भली प्रकार से चिन्तन नहीं कर पाते, हमें और कुछ भी नहीं आता, हम तो केवल आतुर कण्ठ से "गुरुदेव" शब्द का उच्चारण ही कर सकते हैं, और इसी शब्द के माध्यम से आपके द्वारा सिद्धाश्रम प्राप्त कर पूर्ण ब्रह्म में लीन हो जाना चाहते है, हम तो केवल इतना जानते है, कि आप ही हमारे आश्रय भूत हो, आप ही हमारे जीवन के आधार हो, आप ही हमारे भव सागर के जहाज स्वरूप हो हम तो केवल आपका ही आश्रय ग्रहण करते है, और आपको हम सब श्रद्धायुक्त प्रणाम करते है।

जो इस पंच रत्न स्तवन का नित्य पाठ करता है, वह निश्चय ही समस्त विकारों से मुक्त होकर ब्रह्म स्वरूप गुरु चरणों में लीन होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। प्रति दिन इस स्तवन का पाठ करना चाहिए, अथवा सोमवार और गुरुवार का तो निश्चय ही इसका पाठ कर बाद में ही अन्न जल ग्रहण करना चाहिए।

देह सूक्ष्म प्रयोग

उपरोक्त पंच रत्न स्तवन का पाठ करने के बाद साधक निम्न प्रकार से देह सूक्ष्म प्रयोग सम्पन्न करें।

साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं अमुक गौत्र, अमुक नाम का शिष्य अपने देह की रक्षा करता हुआ, अपने स्थूल देह को सूक्ष्म देह में परिवर्तित कर समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करने की सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए परम पूज्य गुरूदेव को और उनकी समस्त शक्तियों उनके समस्त ज्ञान, और उनकी समस्त सिद्धियों के साथ मैं उन्हें अपने शरीर में समाहित करता हूं।

गुरूदेव शिरः पातु हृदयं निखिलेश्वरः ।
कंठं पातु महायोगी वदनं सर्व-दृग्-विभुः ।
करो मे पातु पूर्णात्मा पादो रक्षतु स्वामिनः ।
सर्वांगं सवदा पातु परं ब्रह्म सनातनम् ।
यः पठेद् गुरू कवचं ऋषि-न्यास पुरः सरम् ।
स ब्रह्म ज्ञानमासाद्य साक्षात् ब्रह्म मयो भवेत् ।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
कण्ठे दक्षिणे बाहौ सर्व सिद्धिश्वरो भवेत् ।
इत्येतत् परमः गुरू कवचं यः प्रकाशितम् ।
दद्यात् प्रियाय शिष्याय-भक्ताय प्रिय धीमते ।

अर्थात् परम पूज्य गुरूदेव हमारे सिर की रक्षा करें, परम पूज्य स्वामी निखिलेश्वरानंदजी हमारे हृदय की रक्षा करे, महायोगी गुरूदेव हमारे कण्ठ की रक्षा करें, और समस्त ब्रह्माण्ड को देखने वाले ब्रह्म स्वरूप गुरूदेव हमारे शरीर की रक्षा करे,

पूर्ण स्वरूप गुरूदेव मेरे दोनों हाथों की रक्षा करे, मेरे स्वामी गुरूवर मेरे दोनों पैरों की रक्षा करे, सनातन ब्रह्म स्वरूप परम पूज्य गुरूदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी मेरे समस्त शरीर की रक्षा करे।

इस गुरु कवच का ऋषि महायोगी, छन्द अनुष्टुप देवता स्वयं गुरूदेव तथा चतुर्वर्ग फल प्राप्ति के लिए यह प्रयोग है। जो शिष्य इस प्रयोग का पाठ करता है, वह समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर गुरुदेव का प्रिय बनता हुआ पूर्ण रुप से ब्रह्म मय हो जाता है।

जो शिष्य इस कवच को भोज पत्र पर लिख कर स्वर्ण गुटिका में रख कर अपने कण्ठ या दाहिनी भुजा पर धारण करता है, वह निश्चय ही समस्त प्रकार की सिद्धियों का स्वामी होता हैं।

मैंने अत्यन्त गोपनीय इस गुरु कवच को स्पष्ट किया है, इसे गुरु भक्त बुद्धिमान और प्रिय शिष्य को ही प्रदान करना चाहिए।

इस प्रकार साधक इस स्तोत्र कवच का पाठ कर दोनों हाथ जोड़ कर गुरूदेव के चित्र या उनकी पादुका के सामने भक्तिभाव के साथ प्रणाम करे-

करूणामय ! दीनेश ! तवाहं शरणं गतः ।
त्वत्-पदाम्भोरुहच्छायां देहि मूर्ध्नि यशोधन ॥

अर्थात् हे, करूणामय, हे तीन लोकों के ईश्वर, मैं आपकी शरण में आया हूँ, हे गुरूदेव, हे कृपापुंज ! मेरे मस्तक पर अपने चरण कमलों की छाया प्रदान करे।

इस प्रकार साधना और प्रयोग सम्पन्न करने के बाद जब गुरू प्रसन्न होते है, तो उनके चित्र से या उसकी पादुका से (यदि वे साक्षात उपस्थित हो तो उनके मुंह से) शब्द उच्चरित होते हैं-

उत्तिष्ठ वत्स । मुक्तोऽसि ब्रह्म-ज्ञान-परो भव ।
जितेन्द्रियः सत्य-वादी बलारोग्यं सदास्तु ते ॥

यदि पूज्य गुरूदेव सशरीर सामने उपस्थित न हो तो साधक ऐसा अनुभव करे, कि पूज्य गुरूदेव उसे ऐसा ही आशीर्वाद दे रहे है।

अर्थात् हे पुत्र, हे शिष्य, हे आत्मीय, उठो, तुम मुक्त हो, मेरे शिष्य रहते हुए ब्रह्म ज्ञान का अध्ययन करो, तुम इन्द्रियों पर अपने विकारों और बुद्धि पर नियंत्रण करते हुए सत्यवादी बने रहो, और चुनौतियों का दृढ़ता के साथ सामना करो। बल और आरोग्य हमेशा तुम्हारे साथ रहे और तुम पूर्णता प्राप्त करो।

इसके बाद साधक खडे हो कर पूर्ण भक्ति भाव से गुरूदेव की आरती सम्पन्न करे और गुरूदेव को समर्पित किया हुआ प्रसाद स्वयं तथा अपने परिवार को दे, तथा गुरूदेव का आज्ञाकारी हो कर देवता के समान भूमण्डल पर विचरण करता हुआ, उनके आदर्शों का पालन करे।

○○
○○

निखिलेश्वरं

निखिलेश्वरं भुवनेश्वरं, भवनेश्वरं, यजनेश्वरं। परमेश्वरं मदनेश्वरं सर्वेश्वरं कामेश्वरं ।
वरणेश्वरं, करणेश्वरं, भाग्येश्वरं, दक्षेश्वरं। कार्येश्वरं, कर्मेश्वरं, पूर्णेश्वरं निखिलेश्वरं ।१॥

यक्षेश्वरं, दक्षेश्वरं, अमलेश्वरं, कमलेश्वरं। नाथेश्वरं, योगेश्वरं, गैरेश्वरं, नामेश्वरं ।
लेखेश्वरं, लक्ष्येश्वरं, मायेश्वरं, सकलेश्वरं । नरमेश्वरं, शिष्येश्वरं विमलेश्वरं निखिलेश्वरं ॥२॥

पदमेश्वरं, कनकेश्वरं देहेश्वरं, देवेश्वरं,। ज्ञानेश्वरं, तापेश्वरं, कायेश्वरं, वागीश्वरं ।
मणिकेश्वरं, पलभेश्वरं, इच्छेश्वरं, पूर्णेश्वरं। मंत्रेश्वरं तंत्रेश्वरं यंत्रेश्वरं निखिलेश्वरं ॥३॥

एकेश्वरं, दित्यैश्वरं, भव्येश्वरं, शब्देश्वरं । विद्येश्वरं परमेश्वरं जयमेश्वरं रक्षेश्वरं ।
तारेश्वरं, शक्तिश्वरं, भक्तेश्वरं शक्त्येश्वरं। धरणीश्वरं व्यापेश्वरं, सिद्धेश्वरं निखिलेश्वरं ॥४॥

श्रींशेश्वरं ह्रींशेश्वरं, क्लींशेश्वरं, भायेश्वरं । चिन्त्येश्वरं, एकेश्वरं वागेश्वरं कालेश्वरं ।
तपसेश्वरं, तापेश्वरं सृष्टयेश्वरं, तरणेश्वरं । निखिलेश्वरं निखिलेश्वरं निखिलेश्वरं निखिलेश्वरं ॥५॥

क्या आप साधना में असफल हो रहे हैं ?

क्या आपको अभी तक किसी प्रकार की अनुभूति नहीं हुई ?

क्या आपने अभी तक अपने इष्ट के साक्षात दर्शन नहीं किये

तो फिर पूज्य गुरूदेव के जन्म दिवस पर यह लेख आपके लिये

प्रत्यक्ष सिद्धि साधना प्रयोग

★

कई बार साधकों को प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पाती, वे गुरु आज्ञा से किसी साधना में भाग तो लेते है, अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न भी करते हैं, उनका प्रयत्न भी यही होता है कि वे जो साधना कर रहे है उसमें उन्हें सफलता मिल जाय। परन्तु प्रयत्न करने पर भी न तो उन्हें किसी प्रकार की अनुभूति होती है और न किसी प्रकार की सफलता ही मिलती है, इससे उनका मन खिन्न हो जाता है।

और यह खिन्नता साधक को उदासीन बना देती है, वह यह सोचता है कि ये साधनाएं क्या सही है, क्या इन साधनाओं से सफलता मिलती भी है, क्या किसी को इष्ट के साक्षात दर्शन हुए भी है और इन सबसे धीरे धीरे साधक साधना से किनारा करता रहता है।

परन्तु यही स्थिति शिष्य या साधक के लिए घातक होती है, मनुष्य वह होता है, जो पूरे प्रयत्न से और निरन्तर प्रयत्न से सफलता प्राप्त करता है, कोई भी कार्य या सफलता पहली या दूसरी बार में ही नहीं मिल जाती। हिमालय पर चढ़ने के लिए तेनजिंग को २६ बार प्रयत्न करना पड़ा। महाकाली सिद्ध करने के लिए रामकृष्ण परमहंस को १७ बार एक ही साधना को बार-बार करना पड़ा। स्वामी विवेकानंद ने १४ बार कुण्डलिनी जागरण साधना सम्पन्न करने के बाद अपनी पूर्ण कुण्डलिनी जागृत की थी, पर इन साधकों ने हिम्मत नहीं हारी, इन साधकों के मन में किसी प्रकार की वितृष्णा पैदा नहीं हुई, जब गुरू ने कह दिया तो उन्होंने उस बात को दृढ़ता से स्वीकार कर लिया और निरन्तर प्रयत्न में रहे कि मुझे अपने जीवन में और साधना में सफलता प्राप्त करनी ही है,

और उन्होंने सफलता प्राप्त की। सफलता की प्राप्ति ही नहीं की, अपितु अपने अपने क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध भी हुए वास्तव में ही वे माताएं धन्य है, जो ऐसे पुत्र उत्पन्न करती है, जिनके मन में दृढ़ निश्चय होता है, जो पूणता के साथ गुरु आज्ञा का पालन करते है, और निरन्तर साधना में रत रह कर पूर्णता, सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त कर लेते हैं, ऐसे ही साधक प्रकाश पुंज बन कर पूरे विश्व को आलोकित करते हैं, और अपना तथा अपने कुल का नाम सम्मानित करते है।

साधना में दृढ़ता

साधना में दृढ़ता के लिए यह आवश्यक है, कि साधक का गुरू के प्रति पूर्ण प्रेम भाव सम्मान और निष्ठा होनी चाहिए, मैंने कई साधकों को देखा है, कि उनके दिन भर के कार्य छल प्रपंचमय होते है, और उनके मुंह से चौबीसों घण्टे 'अनुभूति' शब्द की रट लगी रहती है, बार-बार उनके मुंह से यही शब्द निकलते है कि हमें तो अनुभूति नहीं हुई, वे समय मिलने पर आलोचना, निन्दा और अपनी बड़ाई करते रहते है, गुरू के प्रति जो सम्मान भावना होनी चाहिए, जो अन्तरंगता और तादात्म्य होना चाहिए वह तो पूरी तरह से होता नहीं, और अनुभूति की उम्मीद करते है, यह कैसे संभव है। शास्त्रों में कहा गया है-

> जिह्वा दग्धं परान्नेन, हस्तो दग्धो प्रतिग्रहात्।
> मनो दग्धं पर-स्त्रीभिः, कथं सिद्धि वरानने॥

अर्थात् छल कपट और झूठ के साथ व्यापार करने से हाथ जल जाते है, या दग्ध हो जाते है, दूसरों की तथा गुरू की निन्दा करने पर और अशुद्ध अन्न खाने पर जीभ दग्ध हो जाती है, दूसरी स्त्री के प्रति रूचि लेने पर मन दग्ध हो जाता है, फिर ऐसे साधक को सिद्धि कहां मिल सकती है।

शास्त्रों में कहा गया है, कि अपना कार्य करना साधक के लिए आवश्यक है, पर साधना में सफलता के लिए जीभ निरन्तर गुरू मंत्र और मन का निरन्तर गुरू

पूज्य गुरुदेव

के प्रति समर्पण होना आवश्यक है, और जब ऐसा विशुद्ध भाव से हो जाता है, तो फिर अनुभूति भी हो जाती है, सफलता भी मिल जाती है और साधना में सिद्धि भी मिल जाती है।

फिर भी शास्त्रों में साधक के जीवन में न्यूनता होने पर कुछ विशेष प्रयोग दिये है, जिसे सम्पन्न करने पर सिद्धि और साधना अवश्य प्राप्त हो जाती है, नीचे मैं कुछ गोपनीय प्रत्यक्ष सिद्धि साधना प्रयोग दे रहा हूं जिसे सम्पन्न करने पर निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

साधना प्रयोग

सर्व प्रथम साधक या साधिका मन में यह निश्चय करे कि मुझे अपने जीवन में साधना में सफलता प्राप्त करनी ही है, और इसके लिए मेरे मन से, वचन से शरीर से या वाणी से जो पाप और दोष हुए है, या जो पाप

और दोष हो रहे है, उनकी निवृत्ति के लिए तथा शीघ्र ही साधना में सिद्धि के लिए मैं यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

यह प्रयोग आठ दिन का है, किसी भी गुरूवार के प्रातः काल से प्रारम्भ करके अगले गुरूवार को यह प्रयोग सम्पन्न होता है। साधक प्रातः काल स्नान कर शुद्ध स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सफेद सूती आसन पर एक निष्ठ हो कर बैठ जाय और सामने रजत पात्र या ताम्र पात्र अर्थात् चांदी की थाली या तांबे के पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे, और इसे किसी लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित कर दें।

फिर अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण "प्रत्यक्ष सिद्धि-प्रदाय महाविद गुरु यंत्र" को स्थापित कर दे। यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय, दुर्लभ और महत्वपूर्ण होता है जिस पर विशेष महाविद्या मंत्र से अभिसिंचन किया हुआ होता है। यह यंत्र अपने सदगुरू से प्राप्त कर लेना चाहिए, (यों पत्रिका कार्यालय ने इस प्रकार के बहुत कम यंत्र साधकों के कल्याण के लिए सम्पन्न करवाये है जिनमें से प्रत्येक यंत्र पर न्यौछावर मात्र २५०) रु. आया है, इस पर सवा लक्ष परकृत मंत्र से सम्पन्न कर पूर्ण सिद्धिकृतं बनाया है, और इसे स्वस्तिक पर नीचे पुष्प बिछा कर उस पर स्थापित कर देना चाहिए, और पीछे पूज्य गुरुदेव का चित्र यदि साधक के पास हो, तो उसे मढ़वा कर स्थापित करना चाहिए, इसके बाद साधक अपनी मूल साधना प्रारम्भ करे।

साधना सिद्धि

सर्व प्रथम साधक अपने बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर पर जल छिड़कता हुआ अपने शरीर को पवित्र करे-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

इसके बाद साधक अपने दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आच न करे-

१- ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा।

२- ॐ विद्या-तत्वं शोधयामि स्वाहा।

३- ॐ गुरु-तत्वं शोधयामि स्वाहा।

तीन बार आचमन करने के बाद अपने हाथ धो कर पवित्र कर दे, और फिर दाहिने हाथ में जल ले कर संकल्प करे-

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशे अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलियुगे कलि-प्रथम चरणे अमुक-सम्वत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गौत्रोत्पन्नो अमुक-नाम-शर्मा सर्वत्र यशो-विजयादि लाभार्थं सर्वारिष्ट निवृत्ति-पूर्वक-सफल-मनोकामना-सिद्ध्यर्थं च श्री गुरुदेव प्रीत्यर्थं सर्वसिद्धि साफल्य हेतु प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग महं करिस्यै।

इस प्रकार संकल्प पढ़ कर दाहिने हाथ में लिया हुआ जल अपने सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें।

रक्षा विधान

इसके बाद बांये हाथ में थोडे से चावल लेकर दाहिने हाथ से उन चावलों को अपने चारों ओर छिड़कते हुए निम्न प्रकार से रक्षा विधान करे-

ॐ गुरु वै महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाचराक्षसानां सर्वदृष्टिभयविनाशाय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते रूद्राय स्वाहा । ॐ नमो भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा । ॐ सिं सिंह शार्दूल गजेन्द्र-ग्राह-वक्र सर्पव्याघ्रादिमृगान् बन्धामि । ॐ श्रोत्रं बन्धामि । ॐ वाछं बन्धयामि । ॐ गति बन्धामि । ॐ आशां बन्धामि । ॐ दिशां बन्धामि । ॐ सवग्रंधं बन्धामि । ॐ सर्वमायां वन्धामि । ॐ सर्वजनान् बन्धामि । ॐ बन्धं बन्धामि कुरू स्वाहा । ॐ पंचयो-जनविस्तीर्णे रुद्रो वदति मण्डलं कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते सद्गुरु रात्रिज्वर-सायंज्वर-प्रातर्ज्वर-अग्निज्वर-शीतज्वर-द्वन्द्वज्वर-राक्षसज्वर-भूतज्वर-माण्डज्वर-पापिज्वर-मति-प्रयोगादि ज्वरविनाशाय स्वाहा ।

अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-प्राणशूल-दन्त-शूल - गण्डशूल-शिरःशूल शिरोर्द्धशूल-पादशूल--पदार्द्धशूल-सर्वागंशूलविनाशाय स्वाहा ।

ॐ सर्वव्याधिविनाशाय स्वाहा । ॐ सर्वशत्रुविनाशाय स्वाहा । ॐ अपहृतशोकादिविनाशाय स्वाहा । ॐ आत्मरक्षे प्राणरक्षे अग्निरक्षे प्रथम अग्निरक्षे ते शावकं बन्धामि ॐ ह्रां ह्रीं देहि स्वाहा । ॐ इन्द्राय देहि स्वाहा । ॐ स्वर स्वर ब्रह्मदे इति विजाते विष्णुदण्ड ॐ ज्वर ज्वर ईश्वरदण्ड ॐ जं तं नं भंजनिरिति दण्ड ॐ प्रहर ३ ह्रीं लीं ह्रीं लीं यमदण्ड ॐ नित्य-नित्य दण्डविषये विश्वाश्व-वाहिनि हंसिनि शूलिनि गारुडि रक्षे आयुः पुत्रं प्रवक्ष्यामि ।

इसके बाद साधक इस पात्र में रखे हुए दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण यंत्र का मानस पूजन सम्पन्न करे।

मानस पूजन

१- ॐ "लं" पृथ्वी तत्वात्मकं गन्धं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः ।
२- ॐ "हं" आकाश-तत्वात्मकं पुष्पं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः ।
३- ॐ "यं" वायु तत्वात्मकं धूपं श्री गुरुदेव प्रीतये आघ्रापयामि नमः ।
४- ॐ "रं" अग्नि-तत्वात्मकं दीपं श्री गुरुदेव प्रीतये दर्शयामि नमः ।
५- ॐ "वं" जल तत्वात्मकं नैवेद्यं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः ।
६- ॐ "सं" सर्व-तत्वात्मकं ताम्बूलं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः ।

इसके बाद साधक १०१ माला (रूद्राक्ष या शुद्ध स्फटिक माला से मंत्र जप सम्पन्न करे ।

मंत्र

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

(शेष पृ. ३९ पर)

पूर्व जन्म कृत दोष निवारणार्थ

साधक को कई बार प्रयत्न करने पर भी साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती, इसके कई कारणों में से एक कारण यह भी होता है, कि उस साधक के पिछले जीवन के या इस जीवन के दोष या पाप इतने अधिक होते है, कि वह प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो पाता।

इसके लिए पांच चिन्तन स्पष्ट हैं-१) दीक्षा यदि नहीं ली हुई हो तब भी साधना में सफलता संदिग्ध रहती है, दीक्षा के उपरान्त भी यदि गुरु के प्रति आलोचना उनके प्रति भ्रम और संशय रहता है, तो भी सफलता नहीं मिल पाती ३- जो साधना काल में अपने इष्ट और गुरु में अन्तर समझता है, या पूर्ण हृदय से गुरु-चिन्तन, गुरु पूजा अथवा गुरु मंत्र जाप नहीं कर पाता है, तब भी साधना में सफलता नहीं मिल पाती। ४- गुरु के बताये हुए कार्यों में शिथिलता बरतना या आज्ञा पालन में न्यूनता रखने से भी साधना में सफलता संदिग्ध हो जाती है ५- और पिछले जीवन के अथवा इस जीवन के पाप, दोष अधिक हो, तब भी प्रयत्न करने पर सफलता नहीं मिल पाती।

उपरोक्त पांच कारणों में से प्रथम चार या पहली चार बाधाएं तो गुरु की सेवा करने से उनके सानिध्य में रहने से अथवा उनकी आज्ञा का पालन करने से और निरन्तर गुरु मंत्र जप करने से इन चारों दोषों का शमन हो जाता है, पांचवा दोष गंभीर होता है क्यों कि मन से वचन से और कर्मगत किये गये कार्यों से दोष व्याप्त हो जाता है, अतः इस पांचवे प्रकार के दोष को दूर करने के लिए अर्थात् पिछले जीवन के दोषों को और वर्तमान जीवन के दोषों को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त सफल, महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, जो कि पत्रिका के इस १०० वे विशेषांक में साधकों के कल्याण हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं।

यह प्रयोग गुरुवार को किया जाता है, और आठ गुरूवार तक यह प्रयोग सम्पन्न होता है। गुरुवार के दिन साधक स्नान कर पीली धोती धारण कर पूर्व या उत्तर दिशा की और मुंह कर बैठ जाय, सामने पूज्य गुरुदेव का अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर चित्र स्थापित करे, तथा उनकी भक्तिभाव से पूजा करे। उन्हें नैवैद्य समर्पित करे, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे, घी का दीपक लगावें, और स्वयं "गुरू रुद्राक्ष" माला धारण कर पूर्ण शुद्ध सात्विक भाव से निम्न प्रयोग सम्पन्न करे-

प्रयोग विधि

साधक तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर पी ले और उसके बाद हाथ धो कर प्राणायाम करे और फिर दाहिने हाथ में जल कुंकुम, पुष्प लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु देशकालौ संकीर्त्य अमुक गौत्रस्य अमुक शर्माऽहम् ममोपरि इह जन्म गत जन्म स्वकृत परकृत–कारित क्रियमाण कारयिष्यमाण-भूत-प्रेत पिशाचादि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र ओटकादिजन्यसकलदोष बाधा निवृत्ति पूर्वक पूर्ण सिद्धि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादि-प्राप्त्यर्थ शमन साधना प्रयोग करिष्ये।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें और गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से गुरू मंत्र जप करे-

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः

एक माला मंत्र जप करने के बाद उस रुद्राक्ष माला को गले में धारण कर ले **और पूर्व दिशा की ओर** मुंह कर बैठ जाय, सामने गुरू चित्र लकड़ी के बाजोट पर स्थापित करे, उस पर शुद्ध घृत का दीपक लगावें, और हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

ॐ में पूर्ववत इह गतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा इन्द्र साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंद मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु भारयतु कलि तस्मे प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

इसके बाद पूर्व की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

पूर्वदिशाकृत गुरु मंत्र

।। ॐ श्रीं निखिलेश्वरनंदाय श्रीं ॐ ।।

२- इसके बाद साधक अग्निकोण की ओर मुंह कर बैठ जाय सामने गुरू का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और सामने घी का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे–

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अग्नि साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलि तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शांतिः स्वस्त्ययनचास्तु।

इसके बाद अग्निकोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

अग्नि दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ऐं ऐं निखिलेश्वर नंदाय ऐं ऐं नमः।।

३– इसके बाद साधक **दक्षिण दिशा की ओर** मुंह कर बैठ जाय, सामने लकड़ी के बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर गुरू चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा दक्षिण नाशयतु साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे–

दक्षिण दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ह्रीं परमतत्वाय निखिलेश्वराय ह्रीं नमः ।।

४- इसके बाद नैऋत्य दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कमरणा नैऋत्य रक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद नैऋत्य कोण की मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

नैऋत्य दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ क्लीं क्लीं निखिलेश्वरनंदाय क्लीं क्लीं नमः ।।

इसके बाद साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा उत्तर दिशा वरूण साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु ।

५-इसके बाद उत्तर दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मन्त्र जप करे।

उत्तर दिशाकृत गुरु मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यै श्रीं श्रीं श्रीं नमः ।।

इसके बाद **वायव्य दिशा की ओर मुंह कर** सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा वायव्य यक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

६- इसके बाद वायव्य कोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र जप करे ।

वायव्य दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निखिलेश्वर्याय श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।।

इसके बाद साधक **पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर**

सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा पश्चिम सोम विप्रराज साक्षी भूत निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शांतिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

७- इसके बाद पश्चिम दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे।

पश्चिम दिशा कृत गुरु मंत्र

।। ॐ क्रीं निखिलेश्वर नंदाय क्रीं ॐ ।।

इसके बाद साधक **ईशान दिशा की ओर** मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ईशान पृथुरत्न साक्षी भूत निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं में प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

८- इसके बाद ईशान कोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

ईशान दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ह्रीं निखिलेश्वयैं ह्रीं नमः ।।

९- इसके बाद ऊपर आकाश (अनन्त) दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अनन्त ब्रह्मा सष्टिराज साक्षी भूत निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शांति स्वस्त्ययनंचास्तु ।

९- इसके बाद साधक ऊपर आकाश की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे-

अनन्त (आकाश) दिशा कृत गुरु मंत्र

।। ॐ "निं" निखिलेश्वयैं "निं" नमः ।।

१०- इसके बाद भूमि की ओर नीचा मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्व गत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अधः नागराजो साक्षी भूत निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद साधक भूमि की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र जप करे-

अधः (भूमि) दिशाकृत गुरु मन्त्र

ॐ निखिलं निखिलेश्वर्यै निखिलं नमः ।

इसके बाद साधक इस प्रकार दसों दिशाओं से संबंधित प्रयोग सम्पन्न कर पुनः मूल गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप पूर्व दिशा की ओर मुंह कर करे।

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः

इस प्रकार एक गुरुवार का प्रयोग सम्पन्न होता है। इस प्रकार साधक आठ गुरुवार इसी प्रकार से प्रयोग सम्पन्न कर लें तो यह दुर्लभ और अद्वितीय प्रयोग संपन्न हो जाता है और इसके बाद साधक पूर्णतः पवित्र, दिव्य, तेजस्वी, प्राणश्चेतना युक्त एवं सिद्धाश्रम का अधिकारी होता हुआ, गुरू का अत्यन्त प्रिय शिष्य हो जाता है, और साथ ही साथ उसके पिछले जीवन और इस जीवन के सभी प्रकार के पाप दोष समाप्त हो जाते है।

यह दुर्लभ प्रयोग प्रत्येक साधक के लिए अपने आप में अद्वितीय है और साधकों को इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

(पृ. ३४ का शेष)

जप समर्पण

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्मे भवतु देव तत्वत् कृतादान्महेश्वर ।

क्षमा प्रार्थना

मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर।
यत् पठितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु में ।।

पुरश्चरण (मन्त्र-सिद्धि)

नित्य १०१ माला जप करते हुए, आठवें दिन अर्थात् अगले गुरूवार के दिन १०१ माला मंत्र जप हो जाने पर मंत्र जप का दशांश होम शुद्ध घृत से करे और उसी दिन आठ छोटे बालकों को भोजन करावे तथा उन्हें यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि दे, यदि यह संभव न हो तो आठ ब्राह्मणों को भोजन करावे।

इस प्रकार विधिवत् यह प्रयोग करने पर साधक सर्व सिद्धिप्रद बन जाता है, उसकी कुण्डलिनी जागृत होने लगती है और वह जीवन में किसी भी साधना को संपन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

वास्तव में ही यह अत्यन्त गोपनीय महत्वपूर्ण और और दुर्लभ प्रयोग है, जो प्रत्येक साधक को सम्पन्न कर जीवन में इष्ट के प्रत्यक्ष दर्शन और किसी भी साधना में सिद्धि प्राप्त कर अपने गुरू का प्रिय पात्र एवं अत्यन्त प्रिय शिष्य बनता हुआ समस्त संसार में अपना तथा अपने कुल का नाम रोशन करता है। ★

जन्म दिवस के अवसर पर

इस वर्ष की अद्वितीय दुर्लभ और सर्वश्रेष्ठ सिद्धि पुरूष साधना

एक ऐसी साधना जो अपने आपमें ही दिव्य और अद्वितीय है । "सिद्धि पुरूष साधना वह है, जिसके द्वारा आप किसी भी प्रकार की सिद्धि प्राप्त कर सकते है, फिर वह भले ही तारा साधना हो, अप्सरा साधना हो, भूत साधना हो, दस महाविद्या साधना हो, या सूक्ष्म प्राण साधना हो, इस एक साधना के द्वारा यह सब कुछ सहज ही प्राप्त हो सकता है ।

इसीलिए उपनिषदों में कहा गया है कि जीवन की अद्वितीय साधना सिद्धि पुरूष साधना है, जिसे गुरू अपने अत्यन्त प्रिय शिष्य को ही ज्ञान दे । एक दूसरे उपनिषद में बताया है कि गुरू अपने जीवन में केवल एक बार किसी एक शिष्य को ही यह साधना प्रदान करे, एक अन्य ग्रन्थ में इस साधना के बारे में बताया है, कि इस साधना के द्वारा मनुष्य कुछ भी कर सकता है ।

और मैं पूज्य गुरूदेव के जन्म दिवस पर इस दुर्लभ साधना को प्रस्तुत कर रहा हूं और मेरी राय में यदि सही अर्थों में कोई शिष्य है, और वह यह साधना सम्पन्न नहीं करता तो वह वास्तव में ही अभागा है, दुर्भाग्यशाली है ।

साधना रहस्य

यह एक दिन की साधना है, जिसे आपको २१ अप्रेल से पहले पहले सम्पन्न कर लेनी है । किसी भी गुरूवार को आप स्नान कर पीले वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय, और सामने पात्र में "सिद्धि पुरुष यंत्र" स्थापित कर दे । **यह यंत्र सूर्य के समान तेजस्वी, और कल्पवृक्ष के समान दुर्लभ है ।**

इस यन्त्र की संक्षिप्त पूजा कर इसके सामने अगरबत्ती और दीपक लगा कर निम्न मंत्र की १०१ माला सम्पन्न करे । २४ घंटों में १०१ माला पूरी हो जानी चाहिए या साधक चाहें तो प्रत्येक २१ माला सम्पन्न होने के बाद घण्टे आधे घण्टे तक विश्राम कर सकता है ।

सिद्धि पुरूष मंत्र

जो आपको मंत्र जप करना है, वह इस प्रकार है-

ॐ ह्लीं तेजसे श्रों परम सिद्धि पुरुषै श्रीं फट् ।।

और जब मंत्र जप पूरा हो जाय तो उस यंत्र को किसी चांदी की चैन या पीले धागे में पिरो कर अपने गले में धारण कर ले और आप तत्क्षण अनुभव कर सकेंगे कि यह यंत्र कितना प्रखर और तेजस्वी है, आप अनुभव कर सकेगे कि सिद्ध यंत्र में कितनी अधिक क्षमता और तेजस्विता होती है।

सर्वथा मुफ्त में

और यह यंत्र आपको सर्वथा मुफ्त में पत्रिका कार्यालय देने जा रहा है। हम योग्य पंडितों से बहुत कम यंत्र तैयार करवा सके है। जिनका प्रपत्र पहले आयेगा उन्हीं को यह यंत्र दे सकेगे। इसके लिए आप अपने किसी परिचित को पत्रिका सदस्य बना कर हमें निम्न प्रपत्र भर कर या इसकी प्रतिलिपि बना कर भर कर हमें भेज दें, हम आपको १०५) रू. की वी. पी. से यह दुर्लभ यंत्र भेज देगे, वी.पी. छूटने पर आप को यह यंत्र सर्वथा सुरक्षित रूप में मिल जायेगा और आपके मित्र को हम पूरे वर्ष भर नियमित रूप से पत्रिका देते रहेगे ।

और साथ में गोपनीय प्रपत्र भी आपको प्राप्त होगा, कि आप इस यंत्र का किस प्रकार से उपयोग करे। आप स्वयं यह अनुभव कर सकेगे कि यह यंत्र कितना तेजस्वी हैं।

हम किसी भी हालत में २१ अप्रेल के बाद यह यंत्र आपको नहीं भिजवा सकेंगे, अतः आपको सारे काम छोड़ कर इस यन्त्र को प्राप्त करने की प्रक्रिया करनी चाहिए आप निर्णय लेने में काफी समय लगा लेते है, पत्रिका आने पर आप एक तरफ रख देते है, और सोचते है, कि समय आने पर मंगा लेंगे, पर तब बहुत विलम्ब हो चुका होता है, अतः आपको चाहिए कि आप कम से कम इस मामले में ढ़ील न बरते तुरन्त, निर्णय ले तथा नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर ले या इसकी प्रतिलिपि कर भर कर ही हमें भेज दें, प्रपत्र प्राप्त होते ही आपको यह **दुर्लभ यंत्र और उसका गोपनीय रहस्य** सुरक्षित रूप से आपके पास १०५ रु. की वी. पी. से भेज देगे। इसमें से ९६) रू. पत्रिका शुल्क आप अपने मित्र से और ९) रू. डाक खर्च उससे प्राप्त कर ले। इस प्रकार यंत्र आपको सर्वथा सुरक्षित रूप में मिल जायेगा।

वी. पी. छूटने पर हम निष्ठापूर्वक पूरे वर्ष भर आपके मित्र को या परिवार के सदस्य को पत्रिका भेजते रहेंगे।

सिद्धि पुरूष यंत्र प्राप्ति प्रपत्र

पत्रिका सदस्यता संख्या...... ....

मैं आपका पत्रिका सदस्य हूँ और मुझे यह दुर्लभ यंत्र प्राप्त करने का अधिकार है। इसीलिए यह प्रपत्र भर कर आपको भेज रहा हूं, आप मुझे उपरोक्त दुर्लभ यंत्र निम्न पते पर भेज दें।

मेरा नाम..

मेरा पूरा पता...

....

वी.पी. छुड़ाने का मैं वायदा करता हूँ, वी. पी. छूटने पर मेरे निम्न मित्र या पारिवारिक सदस्य को पत्रिका सदस्य बना दे और पूरे वर्ष तक आप उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहे।

मेरे मित्र का नाम........ . ...

मेरे मित्र का पूरा पता :: ....

आप सभी प्रकार का पत्र व्यवहार निम्न पते से करे-

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डा० श्रीमाली मार्ग हाई कोर्ट कोलोनी,
जोधपुर ३४२००१ (राज.)

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल. आर. जे. ३६६७/८६-८७

।। नमः निखिलेश्वर्यायै ।।

ॐ नमः निखिलेश्वर्यायै कल्याण्यै ते नमो नमः ।
नमस्ते रुद्र रूपिण्यै ब्रह्म मूर्त्यै नमो नमः ।।१।।

नमस्ते क्लेश हारिण्यै मंगलायै नमो नमः ।
हरंति सर्व व्याधिनां श्रेष्ठ ऋष्यै नमो नमः ।।२।।

शिष्यत्व विष नाशिन्यै पूर्णतायै नमोस्तुते ।
त्रिविध ताप संहर्त्यै ज्ञान दात्र्यै नमो नमः ।।३।।

शांति सौभाग्य कारिण्यै शुद्ध मूर्त्यै नमोस्तुते ।
क्षमावत्यै सुधावर्त्यै तेज वर्त्यै नमो नमः ।।४।।

नमस्ते मंत्र रूपिण्यै तंत्र रूपे नमोस्तुते ।
ज्योतिषं ज्ञान वैराग्यं पूर्ण दिव्यै नमो नमः ।।५।।

य इदं पठतं स्तोत्रं श्रृणुया श्रृद्धयान्वितं ।
सर्व पाप विमुच्यन्ते सिद्धयोगिश्च संभवे ।।१।।

रोगस्थो रोग तं मुच्येत् विपदा त्रारणया दपि ।
सर्व सिद्धि भवेत्स्य दिव्य देह श्च संभवे ।।२।।

निखिलेश्वर्य पंचकं य नित्य यो पठते नरः ।
सर्वान् कामान् मवाप्नोति सिद्धाश्रमो च वाप्नुयात् ।।३।।

—किंकर स्वामी